# अनुक्रम


| क्र.सं. | खंड का नाम | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| **1.** | **खण्ड -1प्रथम विश्वयुद्ध** | |
| | इकाई-1 प्रथम विश्वयुद्ध के कारण एवं परिणाम | 2-12 |
| | इकाई-2 वर्साय की संधि | 13-24 |
| | इकाई-3 लीग ऑफ नेशन की स्थापना व कार्य | - |
| | इकाई-4 वाशिंगटन सम्मेलन – (1921-42) | - |
| **2.** | **खण्ड -2 समाजवाद के वैश्विक उभार के प्रति प्रतिक्रिया- नाजीवाद व फासीवाद** | |
| | इकाई-1 जर्मनी में नाजीवाद | - |
| | इकाई-2 इटली में फासीवाद | - |
| | इकाई-3 जापान में सैन्यवाद (1931-45) | - |
| | इकाई-4 दो विश्व युद्धों के बीच निरस्त्रीकरण की समस्या | - |
| **3.** | **खण्ड -3 द्वितीय विश्वयुद्ध** | |
| | इकाई-1 द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण एवं परिणाम | 25-37 |
| | इकाई-2 संयुक्त राष्ट्र संघ | - |
| | इकाई-3 शीत युद्ध | - |
| | इकाई-4 सोवियत संघ का निर्माण एवं विघटन | - |
| **4.** | **खण्ड-4 आधुनिक एशिया की राजनीतिक व्यवस्था** | |
| | इकाई-1 चीन में राष्ट्रवाद | - |
| | इकाई-2 चीन में साम्यवादी क्रांति | - |
| | इकाई-3 एशिया में विउपनिवेशीकरण | - |
| | इकाई-4 अरब-इजराइल संबंध | - |

# खंड-1 : प्रथम विश्वयुद्ध

## इकाई-1 : प्रथम विश्व युद्ध के कारण एवं परिणाम

**इकाई की रूपरेखा**

**1.1.1. उद्देश्य**
**1.1.2. प्रस्तावना**
**1.1.3. प्रथम विश्वयुद्ध के कारण**
**1.1.4. प्रथम विश्वयुद्ध का प्रारंभ**
**1.1.4.1. प्रथम विश्वयुद्ध का घटनाक्रम**
**1.1.4.2. अमेरिका का प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश**
**1.1.5. केंद्रीय शक्तियों की हार के कारण**
**1.1.6. प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम**
**1.1.7. सारांश**
**1.1.8. बोध प्रश्न**
**1.1.9. संदर्भ ग्रंथ सूची**

### 1.1.1. उद्देश्य

इस इकाई के लेखन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. छात्रों को प्रथम विश्वयुद्ध के आरंभ की पृष्ठभूमि से परिचित कराना।
2. वे कौन से कारण थे कि बिस्मार्क के यूरोप में शक्ति संतुलन व शांति स्थापना के भरपूर प्रयासों के बावजूद प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हो गया, उनसे विद्यार्थियों को अवगत करना।
3. युद्ध के दौरान तटस्थ रहने वाला अमेरिका आखिर क्यों प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होनेको बाध्य हुआ, इस तथ्य पर प्रकाश डालना।
4. केंद्रीय शक्तियों की हार के कारणों पर प्रकाश डालना।

### 1.1.2. प्रस्तावना

प्रथम विश्व युद्ध का आरंभ विश्व इतिहास की एक युगांतरकारी घटना थी। यूरोप में नेपोलियन युग (1804-15), मैटरनिख युग (1815-1848) एवं बिस्मार्क युग (1870-1890) जैसे व्यक्तिपरक युगों का अंत हो गया। प्रथम विश्वयुद्ध के बीज10 मई, 1871 ई. को संपन्न फ्रेंकफर्ट की संधि में मौजूद थे। जर्मनी ने इस संधि द्वारा फ्रांस को अत्यधिक अपमानित एवं कमजोर कर दिया। अब बिस्मार्क को डर था कि कहीं फ्रांस अपने अपमान का बदला न ले। इस तथ्य को ध्यान में रखकर बिस्मार्क ने फ्रांस को मित्रहीन बनाने के उद्देश्य को सामने रखकर अपनी विदेश नीति का जटिल ताना-बाना बुना। जब तक बिस्मार्क जर्मनी का चांसलर रहा तब तक फ्रांस को कोई मित्र न मिल सका।

बिस्मार्क के त्यागपत्र देते ही जर्मनी की विदेश नीति को सम्राट केसर विलियम द्वितीय ने संचालित किया। केसर विलियम द्वितीय की अव्यवहारिक विदेश नीति ने बिस्मार्क की विदेश नीति के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया। फ्रांस को मित्र हीन बनाने में उसके द्वारा किए गए अथक परिश्रम पर पानी फेर दिया। फ्रांस को रूस एवं इंग्लैंड जैसे सशक्त मित्र मिल गए। समस्त विश्व दो गुटों में विभाजित हो गया। एक गुट, इंग्लैंड-फ्रांस एवं रूस का था एवं द्वितीयगुट जर्मनी-इटली एवं आस्ट्रिया का था। इन दोनों के मध्य बढ़ते संदेह, ईर्ष्या एवं प्रतिद्वंद्विता ने समस्त विश्व को प्रथम विश्वयुद्ध की विभीषिका में धकेल दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध में जान-माल की अत्यधिक हानि ने यूरोपीय देशों को शांति की स्थापना हेतु 1919 ई. में पेरिस शांति सम्मेलन के आयोजन हेतु बाध्य किया। यह पेरिस शांति सम्मेलन फ्रांस एवं इंग्लैंड की महत्वाकांक्षा का शिकार हो गया। यह शांति तो स्थापित न कर सका हाँ इसने यूरोप को और अधिक अशांत अवश्य कर दिया। इस अशांति का परिणाम 20 वर्ष पश्चात् 1939 ई. में एक और विश्वयुद्ध के रूप में सामने आया।

### 1.1.3. प्रथम विश्वयुद्ध के कारण

जर्मन सम्राट केसर विलियम द्वितीय की अव्यवहारिक विदेश नीति के कारण समस्त यूरोप 2 गुटों में विभाजित हो गया। इन गुटों के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता, ईर्ष्या एवं अविश्वास ने विश्व को प्रथम विश्वयुद्ध की ज्वाला में झोंक दिया। दो गुटों में विभाजित यूरोप में कुछ देशों के मध्य अत्यधिक वैमनस्य की भावना व्याप्त थी। इंग्लैंड, जर्मनी की बढ़ती नौ-सेना एवं सैन्य शक्ति से चिंतित था। फ्रांस जर्मनी से बदला लेना चाहता था। इटली, फ्रांस से नाराज था। बाल्कन क्षेत्र में सर्बिया एवं आस्ट्रिया के मध्य अत्यधिक तनाव था। रूस सर्बिया का समर्थन कर रहा था। जर्मनी आस्ट्रिया को समर्थन कर रहा था।

सर्बिया एवं आस्ट्रिया के मध्य बाल्कन क्षेत्र में बढ़ता तनाव ही प्रथम विश्वयुद्ध का कारण बना। वैसे तो प्रथम विश्वयुद्ध के आरंभ के पीछे कई कारण विद्यमान थे मगर तात्कालिक कारण आस्ट्रिया के राजकुमार फ्रांसिस फर्डीनेण्ड की हत्या बना। आस्ट्रिया ने इस हत्या के लिए सर्बिया को दोषी ठहराया। जर्मनी का वरदहस्त पाकर उसने सर्बिया पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार 28 जुलाई, 1914 ई. को प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हो गया।

प्रथम विश्वयुद्ध के प्रमुख कारण निम्नवत थे–

#### 1. गुटों की प्रतिद्वंद्विता

प्रथम विश्व युद्ध का सर्वप्रमुख कारण यूरोप में गुटों की प्रतिद्वंद्विता थी। यूरोप में एक के बाद एक गुट निर्मित हुए जिनका जन्मदाता बिस्मार्क था। फ्रांस को मित्रहीन बनाए रखने के उद्देश्य से उसने फ्रांस विरोधी कई गुटबंदियाँ निर्मित की। फ्रांस एक तरफ गुटबंदियों से भयभीत था तो दूसरी तरफ वह मित्र पाने के लिए छटपटा रहा था। फ्रांस की मित्र पाने की लालसा इतनी तीव्र थी कि 1890 में बिस्मार्क के इस्तीफा देते ही उसकी लालसा पूर्ण हो गई। जर्मन सम्राट विलियम द्वितीय ने रूस के प्रति बेरूखी दिखाई। 1890 में 1887 की जर्मन-रूस पुर्णश्वासन की संधि को दुहराया जाना था मगर विलियम द्वितीय ने उसे नहीं दुहराया। परिणाम यह हुआ कि फ्रांस एवं रूस के मध्य 1893 ई. में द्विगुट का निर्माण हुआ।

जर्मनी के विलियम द्वितीय ने नौसेना में वृद्धि कर इंग्लैंड की नींद उड़ा दी। वह भी मित्र की तलाश में घूमने लगा। 1904 में इंग्लैंड ने फ्रांस से मैत्री संधि स्थापित की। इन दो संधियों ने ही 1907 ई. में त्रि-राष्ट्रीय संघ (Triple Entente) के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। यह संघ फ्रांस-रूस एवं इंग्लैंड के मध्य बना था।

अब यूरोप में दो प्रमुख प्रतिद्वंद्वी गुट थे।

(i) 1882 ई. में निर्मित जर्मनी आस्ट्रिया इटली के मध्य त्रिमित्र त्रिगुट (Triple Alliance)

(ii) 1907 ई. में फ्रांस-इंग्लैंड-रूस के मध्य निर्मित त्रिराष्ट्र संघ (Triple Entente)

अब यूरोपीय राजनीति उक्त दो प्रतिद्वंद्वी गुटों का शिकार हो गई। इन दोनों गुटों के मध्य अत्यंत घृणा, ईर्ष्या, विद्वेष एवं संदेह का वातावरण निर्मित हुआ। 1907 ई. में त्रिगुट एवं त्रिराष्ट्रसंघ एक-दूसरे के

अगल-बगल में खड़े हुए थे, 1914 में वे एक-दूसरे के सामने आ गए। इस प्रकार 1914 ई. में इन दोनों गुटों के मध्य प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हो गया।

**2. सैन्यवाद तथा शस्त्रीकरण**

मेरियट महोदय ने सैन्यवाद को विश्वयुद्ध का एक प्रमुख कारण माना है। प्रोफेसर लैंगसम के अनुसार ''एक सैन्यवादी राष्ट्र वह है, जिसमें सैनिक शक्ति सिविल शासन के ऊपर हावी हो जाती है।''

1870 में फ्रांस के विरुद्ध प्रशा की सफलता देखकर यूरोपीय देश सैन्यवाद की तरफ अग्रसर हुए। सभी देश अपनी सैनिक व नौसैनिक शक्ति में वृद्धि करने लगे। रूस के जार ने शस्त्रीकरण पर प्रतिबंध लगाने के लिए हेग में एक सम्मेलन बुलाया मगर जर्मनी के विरोध के कारण शस्त्रीकरण को सीमित करने की योजनाएँ असफल हुई।

सभी देशों में सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। जर्मनी एवं फ्रांस ने अपनी राष्ट्रीय आय का 80 प्रतिशत सैन्य तैयारी में खर्च किया। प्रो. फे. ने स्पष्ट किया है कि –''ऐसा विश्वास किया जाता था कि शस्त्रीकरण आत्म सुरक्षा एवं शांति के लिए किया जा रहा था मगर वास्तविकता यह थी कि इससे देशों में संदेह, भय एवं घृणा का वातावरण निर्मित हुआ।"

जर्मनी एवं फ्रांस को देखकर रूस, इंग्लैंड एवं अन्य देशों ने भी अस्त्र-शस्त्रों को एकत्रित करना प्रारंभ कर दिया। सैन्यवाद एवं शस्त्रीकरण की प्रवृत्ति के चलते यूरोप के बड़े-बड़े राज्य दो परस्पर विरोधी एवं सुसज्जित युद्ध शिविरों में विभाजित हो गया। 1914 ई. तक यूरोपीय राष्ट्रों के पास इतने अधिक अस्त्र-शस्त्र एकत्रित हो गए कि यह कहा जाने लगा कि सारा यूरोप गद्दों के स्थान पर अस्त्र-शस्त्रों पर ही सोता रहा।''

**3. साम्राज्यवाद**

प्रोफेसर लेंगसम ने साम्राज्यवाद और आर्थिक प्रतिद्वंद्विता को विश्वयुद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण बताया है। औद्योगिक क्रांति का शिशु आर्थिक साम्राज्यवाद था। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों की उत्पादन क्षमता बढ़ गई। इन्होंने कच्चे माल की प्राप्ति तथा निर्मित माल की खपत हेतु नए बाजारों की खोज आरंभ की। ये सभी राष्ट्र एशिया एवं अफ्रीका में अपना प्रभावतंत्र कायम करने में जुट गए। जर्मनी साम्राज्यवाद की दौड़ में 'देर आए दुरुस्त आए' की कहावत चरितार्थ करता हुआ तेजी से आगे बढ़ा। साम्राज्यवादी भावना 19वीं सदी के आरंभ तक चरम सीमा तक पहुँच गई। बाल्कन क्षेत्र में रूस का साम्राज्यवादी विस्तार आस्ट्रिया की आँख की किरकिरी बन गया। साम्राज्यवादी विस्तार की भावना ने यूरोपीय राष्ट्रों के बीच इतना अधिक तनाव बढ़ा दिया कि उसकी चरम परिणिति प्रथम विश्वयुद्ध के रूप में सामने आई।

**4. समाचार पत्रों द्वारा व्याप्त उत्तेजना**

यूरोपीय राष्ट्र वैसे ही साम्राज्यवादी संघर्ष के कारण तनाव में थे, समाचार पत्रों ने तनाव को और अधिक भड़काया। प्रायः प्रत्येक राष्ट्र का समाचार पत्र अपने प्रतिद्वंद्वी देश के खिलाफ आग उगल रहे थे। कुछ उदाहरण निम्न थे -

- यदि पृथ्वी से जर्मनी का नामोनिशान मिट जाए तो प्रत्येक अंग्रेज़ और अधिक संपन्न हो जाएगा।- इंग्लैंड का एक समाचार पत्र
- ब्रिटिश साम्राज्य के ध्वंशावशेष पर ही जर्मन साम्राज्य का निर्माण संभव है। - जर्मनी का एक समाचार पत्र

जनमत के निर्माण में समाचार पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इंग्लैंड के समाचार पत्रों ने जब जर्मन सम्राट कैसर विलियम द्वितीय की नीतियों की कड़ी आलोचना की तो जर्मन जनता इंग्लैंड को अपना शत्रु मानने लगी।

1900 ई. तक एक-दूसरे देश के खिलाफ जहर उगलने वाले समाचार-पत्रों की संख्या 10 लाख तक पहुँच गई। जाहिर है कलम की ताकत ने तलवार से अधिक तनाव फैला दिया। जून, 1914 में सेंट पीटर्सबर्ग से प्रकाशित एक रूसी समाचार पत्र बोर्स गजट (Bourse gaztette) ने मोटे अक्षरों में लिखा -

'रूस तैयार है और फ्रांस को भी तैयार रहना चाहिए' यह वाक्य पढ़कर जर्मन सम्राट विलियम द्वितीय का क्रोध सातवें आसमान पर जा पहुँचा।

इस प्रकार समाचार पत्रों द्वारा फैला तनाव समस्त यूरोप को प्रथम विश्वयुद्ध की कगार पर ले आया।

**5. अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नियंत्रित करने वाली किसी अंतरराष्ट्रीय संस्था का अभाव**

1914 के पूर्व के अंतरराष्ट्रीय संबंधों का विश्लेषण करने वाले कतिपय विद्वानों ने उस स्थिति को अंतरराष्ट्रीय अराजकता की स्थिति बताया है। इस समय तक यूरोपीय रंगमंच पर लगभग 25 राष्ट्र थे, मगर इनकी नीतियों को नियंत्रित करने वाली कोई अंतरराष्ट्रीय संस्था नहीं थीं। इस अंतरराष्ट्रीय संस्था के अभाव के कारण विभिन्न देश नैतिकता को ताक पर रखकर परस्पर विरोधी गुट बंदियाँ करते रहे। उदाहरण के लिए इटली एक ओर तो जर्मनी एवं आस्ट्रिया से मित्रता संधि कर चुका था, दूसरी ओर उसने चुपचाप जर्मनी के प्रबल शत्रु फ्रांस के साथ गुप्त संधि की। अंतरराष्ट्री संस्था के अभाव में विभिन्न देश इस प्रकार की गुप्त संधियों के मकड़जाल में उलझते चले गए। इन गुटबंदियों ने इन देशों को प्रथम विश्वयुद्ध के द्वार पर ले जाकर पटक दिया।

**6. जर्मन सम्राट कैसर विलियम द्वितीय की महत्वाकांक्षाएँ**

जर्मन सम्राट कैसर विलियम द्वितीय की विश्व शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा भी प्रथम विश्वयुद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुई। बिस्मार्क की गुटबंदी प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यूरोप में शांति बनी रही। वह जर्मनी को एक संतुष्ट राष्ट्र मानता था। दूसरी ओर वह जल शक्ति बढ़ाकर इंग्लैंड से शत्रुता मोल नहीं लेना चाहता था।

''विलियम द्वितीय इतिहास की यह नसीहत भुला बैठा। उसने संतुष्ट जर्मनी को असंतुष्ट जर्मन राष्ट्र में तब्दील कर दिया। विश्व पर विजय करने की ख्वाहिश में जल सेना में वृद्धि की। इन परिस्थितियों में इंग्लैंड से शत्रुता स्वाभाविक थी। इंग्लैंड भला जर्मनी की इस बढ़ती शक्ति को कैसे देख सकता। अतः उसने फ्रांस एवं रूस के साथ 1907 में जर्मनी के खिलाफ मित्रता की। इस प्रकार कैसर विलियम द्वितीय की महत्वाकांक्षा ने यूरोप को प्रथम विश्वयुद्ध की आग में झोंक दिया।''

**7. पूर्वी समस्या एवं बाल्कन युद्ध**

अपने आप में जटिल पूर्वी समस्या को 1878 ई. में बर्लिन कांग्रेस ने और अधिक उलझा दिया। ईमानदार दलाल की भूमिका निभाने का आश्वासन देने के बावजूद भी बिस्मार्क ने आस्ट्रिया का पक्ष लिया। इससे रूस अत्यंत नाराज हो गया। रूस ने सेनस्टीफनो की संधि(1877) में जो प्रतिष्ठा प्राप्त की थी उसे बर्लिन कांग्रेस के निर्णयों ने धोकर रख दिया। परिणाम यह हुआ कि पूर्वी समस्या और अधिक उलझ गई। बर्लिन सम्मेलन से लौटने पर डिजरायली ने इंग्लैंड में कहा था कि मैं ससम्मान शांति लाया हूँ। मगर इस ससम्मान शांति में भविष्य की अशांति के अंकुर स्पष्टतः मौजूद थे।

1908 एवं 1914 के बीच आस्ट्रिया एवं सर्बिया के मतभेदों ने बाल्कन क्षेत्र में अशांति फैला दी। प्रथम एवं द्वितीय बाल्कन युद्ध भी समस्या का समाधान करने में असमर्थ रहे और समस्त विश्व इस समस्या के चलते प्रथम विश्वयुद्ध के द्वार तक पहुँच गया।

**8. तात्कालिक कारण**

उक्त वर्णित समस्त कारणों ने यूरोप में अत्यधिक तनाव का वातावरण निर्मित कर दिया था। तनाव इतने चरम पर था कि एक छोटी सी घटना भी युद्ध की स्थिति निर्मित करने में पर्याप्त थी। जिसकी आशंका थी वही हुआ, बाल्कन क्षेत्र में एक अप्रत्याशित घटना घट गई।

28 जून, 1914 को आस्ट्रिया हंगरी के युवराज आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डीनेड अपनी पत्नी सोफी के साथ बोस्निया की राजधानी सेराजिवो गए। वहाँ विद्यार्थी संगठन के एक सदस्य गॉवरीलो प्रिंसिप (Gavrilo princip) ने इन दोनों की गोली मारकर हत्या कर दी। इस षडयंत्र में बोस्निया के एक आतंकवादी संगठन 'ब्लैक हैंड' का हाथ था। इस घटना ने सारे यूरोप में सनसनी फैला दी। युद्ध सन्निकट स्पष्टतः दिखाई देने लगा। सर्बिया को 48 घंटे का अल्टीमेटम दिया कि वह अपराधियों को दंडित करे। सर्बिया ने आस्ट्रिया की सभी शर्तें मान ली परंतु यह शर्त नहीं मानी कि अपराधियों के मुकदमे की सुनवाई ऑस्ट्रियन जज की मौजूदगी में हो।

युद्ध के पूर्वाग्रह से ग्रसित आस्ट्रिया को बहाना मिल गया। 28 जुलाई, 1914 को आस्ट्रिया ने सर्बिया पर धावा बोलकर प्रथम विश्वयुद्ध का नगाड़ा बजा दिया।

### 1.1.4. प्रथम विश्व-युद्ध का प्रारंभ

28 जुलाई, 1914 ई. को आस्ट्रिया के सर्बिया पर आक्रमण के साथ ही प्रथम विश्व युद्ध आरंभ हो गया। 1 अगस्त, 1914 ई. को जर्मनी ने रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 3 अगस्त, 1914 ई. को जर्मनी ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 4 अगस्त, 1914 ई. को इंग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 4 अगस्त, 1914 ई. को ही अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने तटस्थ रहने की घोषणा की। 6 अप्रैल, 1917 ई. को अंततः अमेरिका ने भी मित्र राष्ट्रों के पक्ष में प्रथम विश्व युद्ध में प्रवेश किया।

इस प्रकार 28 जुलाई, 1914 को प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हो गया। एक के बाद एक देश इस युद्ध में शामिल होते चले गए। प्रारंभिक दौर में जर्मनी एवं उसके साथियों ने मित्र राष्ट्रों को कई मोर्चों पर शिकस्त दी। अमेरिका के युद्ध में प्रविष्ट होते ही पासा पलट गया। मित्र राष्ट्र विजयी होते चले गए, जर्मनी एवं उसके साथी परास्त हुए। युद्ध का विस्तृत घटनाक्रम इस प्रकार था।

#### 1.1.4.1. प्रथम विश्वयुद्ध का घटनाक्रम

आस्ट्रिया के सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते ही क्रमशः एक के बाद एक देश प्रथम महायुद्ध में शामिल होते चले गए। वस्तुतः पूर्व की संधियों के कारण ये देश एक दूसरे से वचनबद्ध थे किसी एक देश के युद्ध में शामिल होने पर दूसरे मित्र को पूर्व संधि के तहत युद्ध में प्रवेश करना ही था।

युद्ध के पूर्व ही विश्व 2 भागों में विभाजित था। प्रथम गुट त्रिगुट था, जिसका नेता जर्मनी था। अतः इस गुट को हम घटनाक्रम के दौरान केंद्रीय शक्तियाँ (Central Power) कह कर संबोधित करेंगे। दूसरे गुट में इंग्लैंड-फ्रांस एवं रूस थे। अतः इन्हें हम मित्र-राष्ट्र कहकर संबोधित करेंगे।

28 जुलाई, 1914 को आस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 29 जुलाई, 1914 को सोजोनोव और सैनिक गुट ने जार से आस्ट्रिया एवं जर्मनी के विरुद्ध सेना के कूच करने के आदेश पर

हस्ताक्षर का आग्रह किया। 30 जुलाई, 1914 को जार निकोलस ने सेना के लामबंदी के आदेश जारी कर दिए। जार की कार्यवाही से स्थिति जटिल हो गई। जार के आदेश के क्रियान्वयन का समाचार मिलते ही जर्मनी के केसर विलियम ने रूस को 12 घंटे में सेना लामबंदी रोकने की चेतावनी दी। 3 अगस्त, 1914 को जर्मनी ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

त्रिगुट के दो सदस्य जर्मनी एवं आस्ट्रिया व्यापक युद्ध में सम्मिलित हो गए थे। इंग्लैंड का भी युद्ध से अलग रहना संभव नहीं था। यथार्थ में 29 जुलाई, 1914 को सर एडवर्ड ग्रे ने जर्मनी के राजदूत को मैत्रीपूर्ण एवं व्यक्तिगत चेतावनी दी थी कि यदि बेल्जियम को युद्ध में खींचा जाता है तो इंग्लैंड भी युद्ध में प्रवेश करेगा। लेकिन जर्मनी द्वारा बेल्जियम पर आक्रमण करने से ब्रिटेन को म्यान से तलवार निकालने का अवसर मिल गया। सन 1839 में ब्रिटेन ने अन्य महाशक्तियों के साथ बेल्जियम की तटस्थता सुनिश्चित करने की संधि की थी। 4 अगस्त, 1914 को जर्मनी को बेल्जियम की तटस्थता का सम्मान करने के लिए अंतिम चेतावनी दी गई। जर्मनी का कोई उत्तर न मिलने पर जर्मनी तथा ब्रिटेन परस्पर शत्रु बन गए।

**जर्मनी का आक्रमण**

जर्मनी ने बेल्जियम पर आक्रमण कर दिया। लीग और नमूर में बेल्जियम की सेना परास्त हो गई। जर्मनी की सेना फ्रांस तथा ब्रिटेन की सेना को पीछे हटाते हुए फ्रांस बेल्जियम सीमा की ओर आगे बढ़ी, मित्र राष्ट्रों की सेना हट गई और केंद्रीय शक्तियों का प्रभुत्व हो गया। इसी अवधि में फ्रांस ने अल्साम एवं लौरेन पर असफल आक्रमण किया। जर्मन सेना पेरिस की ओर बढ़ती हुई मार्ने (Marne) नदी से आगे पहुँच गई। मित्र राष्ट्रों के लिए स्थिति अत्यंत जटिल हो गई थी, लेकिन जनरल फॉच के नेतृत्व में सेना ने जर्मन सेनाओं को अस्त-व्यस्त कर भारी हानि पहुँचाई। जनरल फॉच ने ब्रिटिश सेना की सहायता से अवसर का लाभ उठाते हुए जर्मन सेना को मार्ने नदी से एथने नदी की उत्तर दिशा में वापस जाने के लिए बाध्य कर दिया।

अब जर्मन सेना ने एशने नदी के तट पर पड़ाव डाला तथा फ्रांसीसी सेना के समस्त आक्रमणों को असफल कर दिया। तदुपरांत दोनों देशों की सेना ने स्विटजरलैंड से उत्तरी सागर तक के विस्तृत क्षेत्र में 4 वर्षों तक भीषण युद्ध किया।

**पूर्वी मोर्चा**

रूसी सेना ने पूर्वी प्रशा पर आक्रमण किया लेकिन तन्नाबर्ग के स्थान पर हिन्डेन वर्ग ने रूसी सेना को पराजित किया और जर्मनी की सीमा से बाहर निकाल दिया। रूस की सेना को आस्ट्रिया के विरुद्ध अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली थी। रूस ने गैलेसिया को ध्वस्त किया। बाद में जर्मनी ने रूसी सेना को गैलेसिया से खदेड़ दिया और वारसा पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया।

इटली त्रिराष्ट्र संधि द्वारा जर्मनी से बँधा हुआ था। मगर वह श्रृगाल नीति का परिचय देते हुए 1915 ई. में मित्र राष्ट्रों के गुट में शामिल हो गया। वह आस्ट्रिया से अपने छीने हुए प्रदेश पुनः प्राप्त करना चाहता था।

**डार्डेनल्स में युद्ध**

जर्मनी तुर्की को मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध में शामिल करना चाहता था। तुर्की ने डार्डेनल्स पर आधिपत्य कर रूस एवं मित्र राष्ट्रों के बीच संचार प्रणाली ठप्प कर दी। इस स्थिति में इंग्लैंड एवं द्रासे ने संयुक्त रूप से डार्डेनल्स पर नियंत्रण करने का असफल प्रयास किया। गैलीपोली(Gallipoli) प्रायद्वीप में ब्रिटिश को करारी हार का सामना करना पड़ा। 1915 में जर्मनी आस्ट्रिया ने सर्बिया को पूर्णतः परास्त

किया। टाउनशैड के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना को तुर्की के समक्ष आत्म समर्पण हेतु बाध्य होना पड़ा। परंतु बाद में जनरल मॉड ने तुर्कों से बगदाद प्राप्त कर लिया। 1915 का वर्ष मित्र राष्ट्रों के लिए हानिकारक रहा।

**वर्ष 1916**

1916 ई. में जर्मनी ने फ्रांस पर तीव्र गति से आक्रमण किया। बाद में फ्रांस एवं इंग्लैंड ने संयुक्त रूप से जर्मनी पर आक्रमण किया।

**नौसैनिक युद्ध**

नौसैनिक युद्ध में ब्रिटिश सेना को अधिक सफलता मिली। जर्मनी उसकी नौसेना का मुकाबला न कर सका। इसी कारण उसने यू वोंट पनडुब्बी द्वारा जहाज डुबाने की नीति अपनाई।

**वर्ष 1917 की गतिविधियाँ**

वर्ष 1917 में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए -

**(1)** अमेरिका का 2 अप्रैल, 1917 में युद्ध में प्रवेश।

**(2)** 1917 की रूसी क्रांति।

जार के अपदस्थ होने पर सत्ता वोल्शेविक दल के हाथों में आ गई। इन्होंने युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर किए।

**व्रेस्ट लिटोवस्क की संधि (3 मार्च 1918)**

इस संधि द्वारा रूस युद्ध से पृथक हो गया। रूस ने जर्मनी को पोलैंड एवं वाल्टिक प्रांतों सहित समग्र पश्चिमी प्रांत दे दिए। इस प्रकार जर्मनी ने अपनी पूरी सेना पश्चिमी मोर्चे पर स्थानांतरित कर दी। मित्र राष्ट्रों के साथ से रूस हट गया मगर इससे पहले ही अमेरिका युद्ध में प्रवेश कर चुका था इससे मित्र राष्ट्रों की स्थिति सुदृढ़ हुई।

**वर्ष 1918 की गतिविधियाँ**

अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने अपनी 14 सूत्रीय शांति योजना जारी की। 14 सूत्रीय कार्यक्रम की लाखों प्रतियाँ जर्मनी एवं सहयोगी देशों में बाँटी गई।

अप्रैल, 1918 मित्र राष्ट्रों की संयुक्त कमान मार्शल फॉच (Marshall Foch) ने संभाली। सितंबर, 1918 तक केंद्रीय शक्तियाँ परास्त होती चली गई। जर्मनी के सहयोगी एक के बाद एक परास्त होते गए। अब युद्ध के मोर्चे पर जर्मनी अकेला खड़ा था।

9 नवंबर, 1918 को जर्मनी में समाजवादी क्रांति हो गई। कैसर विलियम द्वितीय सत्ता त्यागकर हालैंड चला गया। समाजवादी दल के नेता फ्रेडरिक एवर्ट ने गणतंत्र की घोषणा की।

11 नवंबर, 1918 को प्रातः 5 बजे जर्मनी एवं मित्र राष्ट्रों के मध्य शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए। इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हो गया।

### 1.1.4.2. अमेरिका का प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश

**तटस्थता -**

प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारंभ होने पर यूरोपीय देश इसमें शामिल होते जा रहे थे। ऐसे समय में मात्र अमेरिका ही ऐसा देश था, जिसने 4 अगस्त, 1914 को युद्ध के दौरान तटस्थता की घोषणा की।

युद्ध काल में अमेरिका की नीति -

अमेरिका इस समय अपने व्यापार पर ध्यान दे रहा था। तटस्थ रहते हुए भी दो कारणों से उसकी सहानुभूति मित्र राष्ट्रों के साथ थी।

**(1)** अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में फ्रांस ने उसकी मदद की थी।

**(2)** अमेरिका के अधिकांश निवासी इंग्लैंड मूल के ही थे।

मित्र राष्ट्र अमेरिका से काफी संख्या में अस्त्र-शस्त्र एवं अनाज खरीद रहे थे। अमेरिका के जहाज माल लादकर मित्र राष्ट्रों को पहुँचाते थे। इस व्यापार से अमेरिका अत्यंत लाभान्वित हो रहा था। अमेरिका के साथ ''पांचों ऊँगलियाँ घी में और सिर कढ़ाई में'' की कहावत चरितार्थ हो रही थी।

**जर्मनी का यू वोट अभियान**

जर्मनी ने एक नई प्रकार की पनडुब्बी यू-वोट का निर्माण किया। यह पनडुब्बी पानी के अंदर से ही सतह पर तैर रहे जहाज को डुबा देती थी। 1915 में जर्मनी ने इंग्लैंड की आर्थिक नाकाबंदी की, साथ ही चेतावनी दी कि जो भी जहाज इस निषिद्ध क्षेत्र में प्रवेश करेगा उसे नष्ट कर दिया जाएगा। अमेरिका ने प्रत्युत्तर में चेतावनी दी कि यदि जर्मनी ने तटस्थ अमेरिका के जहाजों को नुकसान पहुँचाया तो गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

**अमेरिकी जहाजों को नुकसान**

जर्मनी ने 'आ बैल मुझे मार' की कहावत पर अमल करते हुए अमेरिकी जहाजों को डुबो दिया, 7 मई, 1915 को यह घटना हुई। जर्मन 'यू-वोंट' पनडुब्बियों ने लूसितानिया (Lusitania) नामक अमरीकी जहाज को डुबो दिया। इसमें कुल 128 यात्री मारे गए जिनमें 112 अमरीकी यात्री थे।

**अमेरिका का युद्ध में प्रवेश**

चूँकि जर्मनी द्वारा डुबाये गए जहाज में कोई सामग्री नहीं थी। अतः उसका डुबाया जाना अंतरराष्ट्रीय नियम के विरुद्ध था। 3 फरवरी, 1917 को अमेरिका ने जर्मनी से संबंध तोड़ लिए। परंतु अभी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन युद्ध में शामिल होने से हिचकिचाते रहे। परंतु जर्मनी की गलत नीतियों के कारण अंततः 6 अप्रैल, 1917 को अमेरिका ने मित्र राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध में प्रवेश कर लिया। इससे मित्र राष्ट्रों की स्थिति मजबूत हो गई।

**1.1.5. केंद्रीय शक्तियों की हार के कारण**

प्रथम विश्वयुद्ध में एक ओर केंद्रीय शक्तियाँ, जर्मनी, आस्ट्रिया, तुर्की, बल्गारिया, हंगरी आदि थे तो दूसरी ओर मित्र राष्ट्र इंग्लैंड, फ्रांस एवं रूस आदि थे। इटली यद्यपि त्रिगुट का सदस्य था, मगर 3 मई 1915 को उसने त्रिगुट से निकल जाने की घोषणा कर दी। 23 मई 1915 को वह मित्र राष्ट्रों की ओर मिल कर केंद्रीय शक्तियों के विरुद्ध युद्ध में शामिल हो गया। तुर्की के केंद्रीय शक्तियों की ओर मिलने से मित्र राष्ट्रों की जो स्थिति कमजोर पड़ी थी, उसकी कमी इटली ने मित्र राष्ट्रों के साथ मिलकर पूरी कर दी। युद्ध के आरंभ में केंद्रीय शक्तियों का पलड़ा भारी था, मगर जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ा वैसे-वैसे मित्र राष्ट्रों की स्थिति मजबूत होने लगी।

अमेरिका एक लंबे अरसे से पृथकता की नीति पर चल रहा था। प्रथम विश्वयुद्ध के आरंभ होने पर उसने तटस्थता की घोषणा की थी। परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बनी कि अमेरिका तटस्थ नहीं रह सका। अंग्रेज़ी जहाज 'लुसितानिया' पर 1200 यात्री सवार थे, जिसमें 124 यात्री अमेरिका के थे। 7 मई 1915

को यह जहाज ज्यों ही अमेरिका से चल कर आयरलैंड के दक्षिणी किनारे पर पहुँचा जर्मन पनडुब्बियों ने टारपीडो द्वारा उसको उड़ा दिया। सारे यात्री जहाज सहित समुद्र में समा गए। अमेरिका ने जर्मनी को कड़ी चेतावनी दी कि भविष्य में ऐसा न हो। जर्मनी ने उस चेतावनी की परवाह किए बिना मार्च 1916 में पुनः एक जहाज को टारपीडो द्वारा उड़ा दिया। अमेरिका ने पुनः चेतावनी दी। जर्मनी ने भविष्य में ऐसा न करने का आश्वासन दिया। जनवरी 1917 में जर्मनी ने घोषणा की कि इंग्लैंड के इर्द-गिर्द किसी जहाज को छोड़ा नहीं जाएगा। जर्मनी ने जब अपनी घोषणा पर अमल आरंभ किया तो अमेरिका ने 3 फरवरी 1917 को जर्मनी के साथ अपने कूटनीतिक संबंध तोड़ लिए। 6 अप्रैल 1917 को अमेरिका ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

अमेरिका के युद्ध में प्रवेश करते ही दक्षिण अमेरिका के कई देश युद्ध में शामिल हो गए। स्याम, चीन, साइबेरिया एवं ब्राजील भी मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गए। इस तरह मित्र राष्ट्रों की शक्ति अत्यंत बढ़ गई। केंद्रीय शक्तियों की स्थिति इससे कमजोर पड़ गई, और अंततः केंद्रीय शक्तियों को परास्त होना पड़ा।

### 1.1.6. प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम

प्रथम विश्वयुद्ध के अत्यंत दूरगामी परिणाम निकले इनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

**(1) राष्ट्रीयता का विकास :** यूरोप में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ। अल्सास एवं लारेन फ्रांस को राष्ट्रीयता के आधार पर वापस कर दिए गए।

**(2) नवीन राष्ट्रों की स्थापना :** यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया एवं लैटविया आदि नवीन राष्ट्रों का जन्म हुआ।

**(3) अंतरराष्ट्रीय भावना का विकास :** भविष्य में विश्वयुद्ध की विभीषिका से दूर रहे इसके लिए अंतरराष्ट्रीयता की भावना का विकास किया गया। इस हेतु राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई।

**(4) मजदूर आंदोलनों का आरंभ:** मजदूर आंदोलनों का विकास भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रथम विश्वयुद्ध का ही परिणाम थे।

**(5) आर्थिक प्रभाव :** प्रथम विश्वयुद्ध ने आर्थिक रूप से जन-धन को अत्यधिक हानि पहुँचाई। युद्ध में लगभग 80 लाख लोग मारे गए और लगभग अट्ठावन हजार करोड़ रूपये खर्च हुए थे। बेरोजगारी बढ़ने लगी। हड़तालें, बैंकों व व्यवसायों का दिवाला निकल जाना, यही यूरोप का नया चित्र था। मकान और कारखाने ध्वस्त हो गए। मशीनें नष्ट हो चुकी थीं। इस युद्ध ने विश्व के केंद्र यूरोप को दुर्बल कर दिया।

**(6) सामाजिक प्रभाव :** जन समुदाय के सामाजिक जीवन में भी अनेक परिवर्तन हुए। युद्ध के परिणामस्वरूप लगभग एक करोड़ स्त्रियाँ विधवा हो गई। सामाजिक रीतिरिवाज, परंपराओं, मान्यताओं, आचार-विचारों तथा जीवनशैली पर गंभीर प्रभाव पड़ा। श्रमिक वर्ग की स्थिति पर भी प्रथम विश्वयुद्ध का क्रांतिकारी प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ। मजदूरों की संख्या के साथ उनकी शक्ति में वृद्धि हुई।

**(7) राजनीतिक प्रभाव :** राष्ट्रवाद की विजय युद्ध का प्रमुख परिणाम था। समस्त विश्व में राजतंत्रों के विरुद्ध जनमानस आंदोलित हो उठा। तीन महान साम्राज्य जर्मनी, रूस तथा आस्ट्रिया-हंगरी समाप्त हो गए। 1923 में तुर्कों का उस्मानी राजवंश भी समाप्त हो गया। युद्ध के बाद अमेरिका एक महान शक्ति के रूप में उभरा। युद्ध के बाद उसकी विश्वव्यापी भूमिका बनी रही। विश्व में सर्वहारा वर्ग में नई चेतना का संचार हुआ, इससे सर्वहारा वर्ग का उत्कर्ष हुआ।

अंततः युद्ध की विभीषिका ने अंतरराष्ट्रीय शांति तथा सहयोग की भावना को प्रोत्साहन दिया। सर्वत्र यह आवाज उठाई जाने लगी कि विश्व के सभी देशों को परस्पर मिलकर तथा शांतिपूर्वक रहना चाहिए। परिणामस्वरूप राष्ट्रसंघ का निर्माण हुआ।

**1.1.7 सारांश**

बोस्निया की राजधानी सराजेबो में ऑस्ट्रियन राजकुमार फ्रांसिस फर्डीनिण्ड की पत्नी सहित हत्या के कारण आस्ट्रिया ने 28 जुलाई, 1914 ई. को सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। धीरे-धीरे यूरोप के देश इस युद्ध में शामिल होते गए और प्रथम विश्वयुद्ध आरंभहो गया। इस युद्ध में एक ओर मित्र राष्ट्र (इंग्लैंड, फ्रांस एवं अमेरिका) थे तो दूसरी ओर जर्मनी के नेतृत्व में केंद्रीय शक्तियाँ थीं। युद्ध के प्रारंभ के समय अमेरिका तटस्थ था मगर जब जर्मनी ने अमेरिका के जहाजों को पनडुब्बियों द्वारा डुबाया तो अमेरिका भी जर्मनी के विरुद्ध मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया। अमेरिका के मित्र राष्ट्रों के साथ आने से उनकी स्थिति मजबूत हुई। जर्मनी एवं उसके साथी परास्त हुए।1 नवंबर, 1918 ई. को युद्ध विराम हो गया।

युद्ध में हुई अपार जन-धन की हानि को देखते हुए भविष्य में विश्व शांति के उद्देश्य को लेकर 1919 ई. में पेरिस शांति सम्मेलन आयोजित किया गया। फ्रांस के क्लीमेंशु इंग्लैंड के लायड जार्ज एवं अमेरिका के वुडरो विल्सन इस सम्मेलन के प्रमुख कर्ता-धर्ता थे। मगर इनके बीच मतभेद के कारण विश्व शांति की स्थापना बाधित हुई।

**1.1.8 बोध प्रश्न**

**1.** प्रथम विश्वयुद्ध के कारणों की विस्तृत विवेचना कीजिए।
**2.** प्रथम विश्वयुद्ध के घटनाक्रम एवं प्रभावों का वर्णन कीजिए।
**3.** प्रथम विश्वयुद्ध के कारण एवं परिणामों की विवेचना कीजिए।

**1.1.9 संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. A. Tardieu, The Truth about the Treaty, 1921.
2. Brandenburg, From Bismark to the World War, London, 1938.
3. C. Bluch, The causes of War, 1935.
4. Cambridge Modern History, Vol. XII, Cambridge, 1938.
5. C.D.M. Ketelbey, A History of Modern Times, London, 1951.
6. G.P. Gooch, Before the War : Studies in Diplomacy, 1936.
7. G.P. Gooch, History of Modern Europe, London, 1951.
8. Grant and Temperely, Europe in the Nineteenth and Twentieth Centuries, London, 1950
9. Hazen, Modern European History, New York.
10. Jackson, The between War World, London, 1947.
11. N. Manserg, The Comming of the First World War (1878-1914), 1949.
12. R. Lansing, The Big Four and others of the Peace Conference.
13. R.S. Baker, Wudro Wilson and the World Settlement, 3 Vol., 1923.
14. S.B. Fay, Origins of the War, 1923.
15. H.W.V. Temperly, A History of the Peace Conference, 3 Vol.
16. देवेन्द्र सिंह चौहान, यूरोप का इतिहास (1815-1919), मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1995.
17. देवेन्द्र सिंह चौहान, समकालीन यूरोप, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1986.

**18.** दीनानाथ वर्मा, आधुनिक यूरोप का इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन, पटना, 1993.

**19.** बी.के. श्रीवास्तव, विश्व इतिहास की विषय वस्तु, SBPD पब्लिकेशन, आगरा, 2007.

## खंड-1 : प्रथम विश्वयुद्ध
## इकाई-2 : वर्साय की संधि

**इकाई की रूपरेखा**

**1.2.1. उद्देश्य**
**1.2.2. प्रस्तावना**
**1.2.3. पेरिस शांति सम्मेलन**
 **1.2.3.1 पेरिस शांति सम्मेलन के प्रमुख प्रतिनिधि**
 **1.2.3.2 पेरिस शांति सम्मेलन के उद्देश्य**
 **1.2.3.3 अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के 14 सूत्र**
**1.2.4. पेरिस शांति सम्मेलन में संपन्नसंधियाँ**
 **1.2.4.1. वर्साय की संधि, 28 जून, 1919 ई.**
 **1.2.4.2. वर्साय संधि का आलोचनात्मक मूल्यांकन**
 **1.2.4.3. आस्ट्रिया के साथ सेंट जर्मन की संधि, 10 सितंबर, 1919**
 **1.2.4.4. बल्गारिया के साथ न्यूली की संधि, 27 नवंबर, 1919**
 **1.2.4.5. हंगरी के साथ त्रियानो की संधि, 4 जून, 1920**
 **1.2.4.6. टर्की के साथ सेव्रे की संधि, 10 अगस्त, 1920**
**1.2.5. सारांश**
**1.2.6. बोध प्रश्न**
**1.2.7. संदर्भ ग्रंथ सूची**

### 1.2.1. उद्देश्य

**इस इकाई के लेखन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं -**

1. प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व शांति की स्थापनार्थ संपन्नपेरिस शांति सम्मेलन के घटनाक्रम से छात्रों को परिचित कराना।
2. शांति सम्मेलन की स्थापना के लिए संपन्नपेरिस शांति सम्मेलन आखिर क्यों शांति स्थापित करने में असफल रहा इस तथ्य से छात्रों को वाकिफ़ कराना।
3. पेरिस शांति सम्मेलन के पश्चात् परास्त राष्ट्रों के साथ संपन्नशांति संधियों पर प्रकाश डालना।
4. राष्ट्रसंघ के उद्देश्यों पर प्रकाश डालना।
5. राष्ट्रसंघ की असफलता के कारणों पर प्रकाश डालना।

### 1.2.2. प्रस्तावना

1919 ई. से 48 वर्ष पूर्व फ्रांस को परास्त करने के बाद फ्रेंच राजतंत्र की राजधानी वर्साय में वर्साय (Half of Mirror) नामक राजमहल में 18 जनवरी 1871 को जर्मन नरेशों और सेनापतियों की उपस्थिति में प्रशा के विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया था। वर्साय राजमहल में एक उत्सव मनाया गया था। फ्रांस एवं फ्रांस की जनता के लिए यह एक असह्य अपमान था। इसके बाद10 मई 1871 ई. को

फ्रांस पर फ्रेंकफर्ट की अपमाजनक संधि जर्मनी द्वारा थोपी गई। इस संधि द्वारा जर्मनी ने फ्रांस से अत्यधिक हर्जाना एवं अल्सास व लौरेन जैसे समृद्ध क्षेत्र छीन लिए थे।

इन 48 वर्षों से फ्रांस अपने अपमान का बदला लेने के लिए छटपटा रहा था। 'अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे' वाली कहावत चरितार्थ हुई। प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी परास्त हो चुका था एवं फ्रांस विजेताओं की कतार में खड़ा था।

न्यूटन की गति के तृतीय नियम 'प्रत्येक क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया होती है' को फ्रांस इतिहास में लागू करने को आतुर था। जिस आर्थिक हानि एवं अपमान की ज्वाला में फ्रांस सुलग रहा था,अब वह वही सब जर्मनी के साथ करने को आतुर था। इतिहास भी अब अपने आप को दोहराने को मजबूर था। समय चक्र सब कुछ समझते हुए भी रुककर सब कुछ देखने को मजबूर था।

फ्रांस की स्थिति उस शेर के समान थी जो काफी दिन से भूखा था, जर्मनी की स्थिति उस बकरे के समान थी जिसे कि इस भूखे शेर के सामने भेजा जा रहा था। जर्मनी एवं फ्रांस ही नहीं समस्त यूरोप की निाहें यह देखने को आतुर थीं कि अब क्या होने जा रहा है?

11 नवंबर 1918 ई. को प्रथम महायुद्ध की विराम संधि पर मित्र राष्ट्रों के सेनापति मार्शल फॉच (Marshall Foch) एवं जर्मन प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए। दिन के 11 बजे युद्ध की समाप्ति की घोषणा कर दी गई। घटनाक्रम का यह एक उजला पक्ष था, जिसने यूरोप में अमन कायम किया। मगर इस उजले पक्ष में मौजूद स्याह पक्ष का अहसास सभी को था।

युद्ध पश्चात् शांति सम्मेलन का आयोजन फ्रांस की राजधानी पेरिस से कुछ दूर वर्साय नामक स्थान पर किया गया। चूँकि युद्ध में सर्वाधिक हानि फ्रांस को हुई थी। अतः सम्मेलन के आयोजन हेतु पेरिस को चुना था।

वस्तुतः शांति सम्मेलन के लिए स्थल का चयन अत्यंत अदूरदर्शितापूर्ण था। वर्साय की एक-एक ईंट और पत्थर 48 वर्ष पूर्व जर्मनी द्वारा किए गए फ्रांस के अपमान का साक्षी था। यहाँ के कण-कण में प्रतिशोध की भावना व्याप्त थी। ऐसे अशांत स्थान पर शांति की स्थापना हेतु सम्मेलन का आयोजन एक महान भूल ही नहीं नितांत अव्यवहारिक कदम था।

### 1.2.3. पेरिस शांति सम्मेलन

11 नवंबर, 1918 ई. को प्रथम महायुद्ध की विराम संधि पर मित्र राष्ट्रों के सेनापति मार्शल फॉच एवं जर्मन प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए। प्रथम विश्वयुद्ध में एक ओर अत्यधिक आर्थिक हानि हुई तो दूसरी ओर भारी संख्या में नरसंहार हुआ। इस कारण विश्व के सभी देश शांति स्थापना की ओर अग्रसर हुए। जर्मनी ने अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन की 14 सूत्रीय योजना को पढ़कर आत्मसमपर्ण किया था। अब शांति स्थापना एवं परास्त राष्ट्रों के साथ संधियाँ करने हेतु 1919 ई. में पेरिस में शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया।

#### 1.2.3.1. पेरिस शांति सम्मेलन के प्रमुख प्रतिनिधि

पेरिस शांति सम्मेलन में 32 राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में पराजित राष्ट्रों जर्मनी, आस्ट्रिया, तुर्की, बल्गारिया को स्थान नहीं दिया गया था। पेरिस शांति सम्मेलन में अमेरिका के राष्ट्रपति के अतिरिक्त 11 देशों के प्रधानमंत्री, 12 देशों के विदेश मंत्री एवं अन्य राज्यों के प्रतिनिधि एकत्रित

हुए। 1917 में रूस में क्रांति होने के कारण उसे भी इस सम्मेलन में आमंत्रित नहीं किया गया था। पश्चिमी राष्ट्र साम्यवादी क्रांति के विरोधी जो थे। इस तरह इस सम्मेलन में 32 राज्यों के 70 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

**पेरिस शांति सम्मेलन में प्रमुख प्रतिनिधि निम्न थे–**

1) **फ्रांस के प्रधानमंत्री क्लीमेंशू -** फ्रांस का प्रधानमंत्री पेरिस शांति सम्मेलन का सर्वप्रमुख प्रतिनिधि थे। वह इस सम्मेलन का सभापति भी थे। क्लीमेंशू को 'टाइगर ऑफ फ्रांस' कहा जाता था। अमेरिका के विदेश मंत्री लैंसिंग के अनुसार "क्लीमेंशु शांति सम्मेलन पर छाया हुआ था, उसमें महान नेता के सभी आवश्यक गुण विद्यमान थे।" प्रतिशोध की भावना से ग्रसित क्लीमेंशु जर्मनी को पूर्णतः कुचलना चाहता था ताकि भविष्य में वह फ्रांस के लिए खतरा न बन सके।
2) **इंग्लैंड के प्रधानमंत्री लायड जार्ज :** इंग्लैंड का प्रधानमंत्री एक व्यावहारिक एवं खुशमिजाज व्यक्ति था। वह तीक्ष्ण बुद्धि का स्वामी था। दूसरे व्यक्तियों के चरित्र एवं दुर्बलताओं को वह शीघ्र भाँप लेने में सक्षम था। उनके इस सम्मेलन में भाग लेने के 3 प्रमुख उद्देश्य थे –

**i)** वह जर्मनी के नौसैनिक एवं थल सैनिक शक्ति को इतना कम कर देना चाहता था कि भविष्य में इंग्लैंड के लिए चुनौती न बन सके।

**ii)** वह जर्मनी को तो कमजोर करना चाहता था, मगर फ्रांस को भी अधिक शक्तिशाली नहीं बनने देना चाहता था।

**iii)** युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में लायड जार्ज अधिक से अधिक धन इंग्लैंड के लिए प्राप्त करना चाहता था।

3) **अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन -** अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन का प्रमुख उद्देश्य था यूरोप में आदर्शमय शांति स्थापित करना। युद्ध के दौरान विल्सन ने 8 जनवरी, 1918 को 14 सूत्रीय योजना की घोषणा की थी। जर्मनी ने इन 14 सूत्रों के पालन के आश्वासन पर ही युद्ध विराम लिया था। इसीलिए वुडरो विल्सन चाहता था कि शांति संधियों में इन 14 सूत्रों का पालन हो। विल्सन युद्ध पश्चात् भविष्य में शांति की स्थापना के लिए राष्ट्रसंघ की स्थापना भी कराना चाहता था।
4) **इटली के प्रधानमंत्री ओरलैंडो -** इटली प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारंभ में जर्मनी एवं आस्ट्रिया की ओर से लड़ा था। मगर बीच में उसने श्रृगाल नीति का परिचय देते हुए पाला बदल लिया। उसने इंग्लैंड व फ्रांस से गुप्त संधि कर ली। इन्होंने उसे फ्यूम नगर दिलाने का आश्वासन दिया। इस तरह वह युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर हो गया। पेरिस शांति सम्मेलन में वुडरो विल्सन ने गुप्त संधियों पर अमल नहीं होने की बात कही। इससे इटली की फ्यूम पाने की इच्छा पूर्ण न हो सकी। परिणामस्वरूप ओरलैंडो पेरिस शांति सम्मेलन को बीच में ही छोड़कर वापस आ गया।
5) **जापान के सायोन्जी एवं मकिनो -** जापान के इन प्रतिनिधियों की यूरोपीय समस्याओं में कोई रुचि नहीं थी। वे केवल पूर्वी एशिया में जापानी हितों की रक्षा की खातिर आए थे। चीन में जर्मन प्रभाव वाले शान्तुग क्षेत्र पर वर्चस्व स्थापित करने में इन्होंने विशेष रुचि दिखाई। यूरोपीय मामलों पर वे मूकदर्शक बने रहे।

### 1.2.3.2. पेरिस शांति सम्मेलन के उद्देश्य

पेरिस शांति सम्मेलन के इन प्रतिनिधियों के समक्ष निम्न प्रमुख उद्देश्य थे -

1. आत्म निर्णय के सिद्धांत को कार्य रूप प्रदान करना।
2. एक न्याय संगत एवं चिरस्थायी शांति संधि का मसौदा तैयार करना एवं उस पर हस्ताक्षर कराना।

3. प्रजातंत्र की सुरक्षा को कायम रखना।
4. राष्ट्र संघ के संविधान का निर्माण करना।
5. विश्वयुद्ध की महाविभीषिका से आहत भूखी जनता को अनाज मुहैया कराना।
6. प्रतिशोध की भावना से उत्तेजित मित्र राष्ट्रों की सेनाओं पर नियंत्रण कायम करना।
7. अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के 14 सूत्रों के अनुसार कार्य संपन्न करना।
8. विजेता एवं पराजित राष्ट्रों को संतुष्ट करना।

**पेरिस शांति सम्मेलन की समस्या**

पेरिस शांति सम्मेलन को अपने उक्त उद्देश्यों को प्राप्त करना कोई सरल कार्य नहीं था। उसके समक्ष कई समस्याएँ विद्यमान थीं। सबसे बड़ी समस्या प्रमुख प्रतिनिधियों के मध्य उचित तालमेल के अभाव एवं विरोधाभासी चरित्र की थी। एक ओर क्लीमेंशू एवं लायड जार्ज जर्मनी पर प्रतिशोधात्मक संधि आरोपित करना चाहते थे तो दूसरी ओर वुडरो विल्सन जर्मनी के आत्म निर्णय के सिद्धांत की रक्षा करना चाहते थे। क्लीमेंशू एवं लायड जार्ज की महत्वाकांक्षा के मार्ग में वुडरो विल्सन के 14 सूत्र बाधाएँ उत्पन्न कर रहे थे। अतः क्लीमेंशू एवं लायड जार्ज ने संधियों का मसौदा बनाते समय वुडरो विल्सन के 14 सूत्रों की अनदेखी की। चूँकि जर्मनी ने इन 14 सूत्रों की शर्तों पर ही आत्मसमर्पण किया था, अतः जर्मनी इससे अत्यधिक नाराज हुआ।

### 1.2.3.3. अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के 14 सूत्र

अमेरिकी कांग्रेस के सम्मुख भाषण देते समय अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने 8 जनवरी, 1918 को 14 सूत्रीय कार्यक्रम प्रथम बार प्रस्तुत किया। इन सूत्रों की हजारों प्रतिलिपियाँ युद्ध के दौरान मध्य जर्मनी के इलाकों में फेंकी गई थी। इन सिद्धांतों को पढ़कर ही एवं इन्हें शांति संधि का आधार मानकर जर्मनी ने युद्ध विराम स्वीकार किया था।

विल्सन के 14 सूत्र निम्नवत थे –

1. शांति के समझौते गुप्त रूप से नहीं होने चाहिए। शांति-समझौते प्रकट रूप से किए जाएँ।
2. युद्ध और शांति की स्थिति में सामुद्रिक आवागमन की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
3. राष्ट्रों के बीच आर्थिक अवरोध हटाए जाएँ। अर्थात् किसी प्रकार की आर्थिक दीवार न रहे।
4. हथियारों (अस्त्र-शस्त्र) की होड़ बंद करने के लिए अस्त्र-शस्त्रों की निम्नतम सीमा तक घटा दिया जाए। उतने ही शस्त्रास्त्र रखने की आश्वासन दें, जितने कि आंतरिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए उपयुक्त हो।
5. जनता के हितों को देखते हुए उपनिवेश संबंधी समस्याओं का उचित और निष्पक्ष फैसला हो।
6. रूस के प्रदेशों को खाली कर दिया जाए और अपने-अपने राजनीतिक विकास तथा राष्ट्रीय भावनाओं के निर्धारण की उसकी स्वाधीनता को मान्यता दी जाए।
7. बेल्जियम से जर्मन सेना हटा ली जाए तथा उसे पूर्ण तटस्थ अस्तित्व प्रदान किया जाए।
8. फ्रांसीसी क्षेत्र स्वतंत्र किया जाए अल्सास तथा लोरेन वापस लौटा दिया जाए।
9. राष्ट्रीयता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए इटली की सीमाओं का पुनर्निर्धारण किया जाए।
10. आस्ट्रिया-हंगरी की जनता को पूर्ण स्वायत्त शासन स्थापित करने की स्वतंत्रता प्रदान की जाए।
11. रूमानिया, सर्विया, मांटीनीग्रो से सेनाएँ हटा ली जाएँ। अक्रांत प्रदेश वापस किए जाएँ, सर्विया को समुद्र तक पहुँचने का स्वतंत्र मार्ग दिया जाए।

12. टर्की के साम्राज्य के विरुद्ध अतुर्क प्रदेशों की प्रभुता सुरक्षित रहे तथा शेष भागों को स्वायत्त-शासन मिल सके। डारडेनल्ज और वासफोरस जलमडरूमध्यों में भी राष्ट्रों के जहाज स्वतंत्रतापूर्वक आ जा सकें।
13. पोलैंड को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित किया जाए। पोलैंड को सामुद्रिक मार्ग दिया जाए साथ ही आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रादेशिक अखंडता की अंतरराष्ट्रीय गारंटी दी जाए।
14. छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों को समान रूप से राजनैतिक स्वतंत्रता तथा प्रादेशिक अखंडता का आश्वासन देने के लिए एक राष्ट्र संघ की स्थापना की जाए।

**समीक्षा**

शांति सम्मेलन की सबसे बड़ी समस्या एवं विरोधाभास यह था कि विल्सन के सूत्रों के अनुसार गुप्त संधियों को कोई स्थान नहीं दिया जाना था। दूसरी ओर क्लीमेंशू एवं लायड जार्ज युद्ध के दौरान की गई गुप्त संधियों के तहत निर्णय लेना चाहते थे। इसको लेकर कई बार विल्सन व उनके बीच टकराव की स्थिति निर्मित हुई। वुडरो विल्सन ने इटली को फ्यूम (Fieume) का प्रदेश देने से साफ इनकार कर दिया। इसी कारण ओरलैंडो नाराज होकर सम्मेलन छोड़ कर वापस इटली चला गया।

### 1.2.4. पेरिस शांति सम्मेलन में संपन्न संधियाँ

पेरिस शांति सम्मेलन में काफी मशक्कत के पश्चात पाँच पराजित राष्ट्रों के साथ पाँच पृथक-पृथक संधियाँ संपन्नकी गई -

**(i)** 28 जून, 1919 ई. जर्मनी के साथ वर्साय की संधि
**(ii)** 10 सितंबर, 1919 ई. आस्ट्रिया के साथ सेंट जर्मन की संधि
**(iii)** 27 नवंबर, 1919 ई. बल्गारिया के साथ न्यूली की संधि
**(iv)** 4 जून, 1920 ई. हंगरी के साथ ट्रियानो की संधि
**(v)** 10 अगस्त, 1920 ई. टर्की के साथ सेव्रे की संधि

23 जुलाई, 1923 ई. टर्की के साथ लूसान की संधि (एक बार पुनः)

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम विश्वयुद्ध 28 जुलाई, 1914 से 11 नवंबर, 1918 तक लगभग 4 वर्ष चला। परंतु शांति संधियों को संपन्नकरने में पूरे 5 वर्ष लग गए।

उक्त सभी संधियाँ पेरिस संधियाँ कही जाती हैं। इन सभी संधियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण जर्मनी के साथ की गई वर्साय की संधि थी।

अब हम उक्त सभी संधियों की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत करेंगे।

#### 1.2.4.1. वर्साय की संधि, 28 जून, 1919 ई.

मित्र राष्ट्रों द्वारा पेरिस शांति सम्मेलन में 28 जून, 1919 ई. को वर्साय की संधि संपन्नकी गई। संपूर्ण विश्व के इतिहास में वर्साय की संधि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस संधि की पृष्ठभूमि में एक लंबा इतिहास था, और इस संधि ने आगामी एक लंबे इतिहास का आधार तैयार किया। इस संधि का प्रारूप इस प्रकार बना।

- 4 माह तक गहन विचार विमर्श के उपरांत 6 मई, 1919 ई. को इसका अंतिम प्रारूप तैयार किया गया।
- इस संधि मसौदा में कुल 230 पृष्ठ थे। यह 15 भागों में विभक्त थी। इसमें 439 अनुच्छेद (धाराएँ) थे एवं कुल 80,000 शब्द थे।

- 20 अप्रैल, 1919 ई. को विदेश मंत्री ब्रोकडर्फि रान्टाजू के नेतृत्व में एक जर्मन प्रतिनिधिमंडल वर्साय पहुँच गया था। इन्हें ट्रायनन पैलेस होटल में ठहराया गया था।
- 7 मई, 1919 ई. को संधि का मसौदा जर्मन प्रतिनिधियों को सौंप दिया एवं इस पर विचार विमर्श हेतु 2 सप्ताह का समय उन्हें दिया।
- संपूर्ण जर्मनी में संधि की शर्तों का घोर विरोध हुआ।
- ब्रोकडर्फि ने कहा युद्ध की सारी ज़िम्मेदारी जर्मनी पर लादना न्यायसंगत नहीं है।
- जब इन्होंने संधि पर हस्ताक्षर करने में ना-नुकर की तो सिंह गर्जना करते हुए लायड जार्ज ने कहा -

'जर्मन लोग कहते हैं कि वे संधि पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे। जर्मनी के समाचार पत्र एवं राजनीतिज्ञ भी यही बात कहते हैं। लेकिन हम लोग कहते हैं – "महानुभावो! आपको इस पर हस्ताक्षर करना है। अगर आप वर्साय में ऐसा नहीं करते हैं तो आपको बर्लिन में करना ही पड़ेगा।"

- जर्मन राजनीतिज्ञों ने 26 दिन बाद 60 हजार शब्दों का एक विरोध पत्र सौंपा।
- मित्र राज्यों ने जर्मन प्रस्तावों पर विचार-विमर्श कर संधि प्रस्ताव पर छोटे-मोटे संशोधन किए।
- संशोधित संधि प्रस्ताव युद्ध की चुनौती के साथ5 दिन में हस्ताक्षर करने हेतु जर्मनी को सौंपा गया।
- शिंडेमान सरकार ने संधिको अस्वीकार कर त्यागपत्र दे दिया।
- जर्मनी में नई सरकार बनी, गुस्टावजौर प्रधानमंत्री एवं मूलर विदेश मंत्री बना।
- सेराजेवो हत्याकांड के दिन 28 जून, 1919 (5 वर्ष बाद) जर्मन प्रतिनिधियों ने संधि मसौदा पर हस्ताक्षर कर दिए।

**वर्साय की संधि की प्रमुख धाराएँ**

वर्साय की संधि की प्रमुख धाराएँ निम्न थीं -

**(i) प्रादेशिक व्यवस्थाएँ -**

1. अल्सास लौरेन फ्रांस को दे दिए गए।
2. जर्मन सीमा पर स्थित मेलमिडे और यूपेन बेल्जियम को दिए।
3. खनिज संपदा से भरपूर सार घाटी दोहन हेतु 15 वर्ष के लिए फ्रांस को दी गई, नियंत्रण राष्ट्रसंघ का रहेगा एवं एक आयोग शासन चलाएगा। 15 वर्ष बाद जनमत संग्रह द्वारा सार बासी निर्णय करेंगे कि जर्मनी, फ्रांस, राष्ट्र संघ किसके साथ रहें।
4. जर्मनी अधिकृत श्लेसविग में जनमत संग्रह किया गया उसके आधार पर उत्तरी श्लेसविग डेनमार्क को, दक्षिणी श्लेषविग जर्मनी को दिया गया।
5. जर्मनी को पूर्वी सीमा पर सर्वाधिक नुकसान हुआ। जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस के पोल क्षेत्रों को लेकर स्वतंत्र पोलैंड का निर्माण, समुद्र तट स्थापित करने के लिए जर्मनी का डेनजिंग बंदरगाह पोलैंड को दिया।
6. जर्मनी का वाल्टिक सागर तट पर स्थित मेमल बंदरगाह राष्ट्रसंघ को दिया, ताकि वह लिथुआनिया को स्थानांतरित किया जाए।

7. नवनिर्मित राष्ट्र बेल्जियम, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया की स्वतंत्रता और प्रभुसत्ता को जर्मनी ने मान्यता दी।
8. चेकोस्लोवाकिया को उपरी साइलेशिया का छोटा क्षेत्र दिया।
9. जर्मन उपनिवेश ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, आस्ट्रिया, न्यूजीलैंड, बेल्जियम ने बाँटे।
10. ब्रेस्ट लिटोवस्क संधि द्वारा जर्मनी ने एक बड़ा भाग रूस से छीन कर अपने राज्य में मिला लिया था। उसे वर्साय संधि द्वारा इस भाग पर लैटविया, एस्टोनिया, लिथुआनिया की स्थापना की गई।

**(ii) सैनिक व्यवस्थाएँ -**

1. अनिवार्य सैनिक सेवा समाप्त की गई।
2. स्थल सेना 1 लाख निर्धारित, अधिकारियों को कम से कम 25 वर्ष तथा सैनिकों को 12 वर्ष सेना में रहना पड़ेगा।
3. गोला बारूद, अस्त्र-शस्त्र सीमित किए एवं निर्यात प्रतिबंधित किया।
4. जर्मनी अब वायुसेना नहीं रखेगा।
5. नौसेना सीमित 6 युद्धपोत, 6 लड़ाकू विमान, 12 तोपची जहाज, पनडुब्बी नहीं एवं 15,000 सैनिक अधिकारियों सहित।

**(iii) अन्य व्यवस्थाएँ -**

1. नदियाँ- एल्व, ओडर, नीमन, डेन्यूब अंतरराष्ट्रीय घोषित।
2. कील नहर और इसके मार्गों को सब राष्ट्रों के लिए खोला गया।
3. विलियम II पर घोर अपराध का अभियोग। नीदरलैंड ने उसे सौंपने से इनकार किया अतः मुकदमा न चल सका।
4. जर्मनी को प्रथम विश्वयुद्ध का उत्तरदायित्व स्वीकार करना पड़ा।
5. क्षतिपूर्ति आयोग का गठन।
6. युद्ध में नष्ट हुए प्रदेशों के पुनर्निर्माण के लिए जर्मनी फ्रांस, इटली, बेल्जियम, लक्झमवर्ग को कोयला देगा, फ्रांस को अमोनियम सल्फेट, कोलतार आदि देगा।
7. क्षतिपूर्ति राशि का अंतिम निर्णय होने तक जर्मनी 1921 तक 5 अरब डालर देगा।
8. संधि शर्तों को पूरा करने के लिए कुछ गांरटियों की भी व्यवस्था की गई। राइन के पश्चिम क्षेत्र पर संधि लागू होने के बाद आगामी 15 वर्षों तक मित्र राष्ट्रों की सेनाओं का अधिकार रहेगा। यदि जर्मनी शर्तों का निष्ठापूर्वक पालन करता है तो 5 वर्ष बाद कोलोन क्षेत्र, 10 वर्षों बाद कोबलेंज क्षेत्र, 15 वर्ष बाद मेंज तथा अन्य अधिकृत जर्मन क्षेत्रों से सेना हटा ली जाएगी।

### 1.2.4.2. वर्साय की संधि का आलोचनात्मक मूल्यांकन

वर्साय की संधि की प्रायः अधिकांश विद्वानों ने आलोचना की है। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, जिन्हें इतिहास में विशेष रुचि थी ने वर्साय की संधि पर इन शब्दों में आलोचनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की है- "मित्र राष्ट्र घृणा और प्रतिशोध की भावना से भरे हुए थे वे माँस का पिण्ड ही नहीं चाहते थे, बल्कि जर्मनी के अर्द्धमृत शरीर से रक्त की आखिरी बूँद तक खींच लेना चाहते थे।" वर्साय की संधि का आलोचनात्मक अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है।

1. **प्रतिशोधात्मक संधि -** वर्साय की संधि एक प्रतिशोधात्मक संधि थी। मित्र राष्ट्र विशेषकर फ्रांस में जर्मनी के प्रति प्रतिशोध की भावना व्याप्त थी। फ्रांस के राजनीतिज्ञ एवं जनता जर्मनी से10 मई, 1871 की फैंकफर्ट की अपमानजनक संधि का प्रतिशोध लेना चाहते थे। अतः यह प्रतिशोधात्मक संधि थी।
2. **अपमानजनक संधि -** अमेरिकी विदेशमंत्री लैन्सिग ने कहा था कि ‘‘संधि की शर्तें काफी कठोर एवं अपमानजनक थी। उनमें अधिकांश ऐसी थी जिन्हें क्रियान्वित किया जाना मेरी दृष्टि से असंभव था।’ इतिहासकार हेजन ने लिखा है ‘‘जर्मन जैसा स्वाभिमानी राष्ट्र इन अपमानजनक शर्तों को स्वीकार नहीं कर सकता। अतः यह स्वाभाविक ही था कि भविष्य में पुनः युद्ध द्वारा वह अपने अपमान को धोने और क्षतिपूर्ति की पूर्ति का प्रयत्न करे। अतः स्पष्ट है कि यह संधि अपमानजनक थी।’
3. **आरोपित संधि -** ई.एच. कार महोदय ने इसे आरोपित संधि करार देते हुए कहा कि ‘‘वर्साय की संधि में आरोप का भाव सभी शांति संधियों की अपेक्षा अधिक था।’ इस संधि पर जर्मन के प्रतिनिधियों से धमकी देकर हस्ताक्षर करवाकर उन पर यह संधि जबरदस्ती थोपी गई। इससे पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि यह एक आरोपित संधि थी।
4. **शिष्टाचार का उल्लंघन -** संधि मसौदे पर हस्ताक्षर हेतु जर्मन प्रतिनिधियों को बुलाया गया। उनके साथ उस समय शिष्टाचार का व्यवहार नहीं किया गया। उन्हें कटीले तारों से घिरे एक बंगले में रुकाया गया तथा उनके साथ अपराधी की तरह बाहर तथा भीतर दोनों जगह व्यवहार किया गया। इस प्रकार इस संधि में शिष्टाचार का उल्लंघन कियागया।
5. **संधि का आधार विश्वासघात -** जर्मनी ने विल्सन के 14 सूत्रों का पालन करते हुए युद्ध में आत्मसमर्पण किया था। परंतु जब संधि की गई तो विल्सन के14 सूत्रों को कोई अहमियत नहीं दी गई। इंग्लैंड का प्रमुख उद्देश्य था कि युद्ध की लूट को आपस में बाँटा जाए। जर्मनी के साथ विश्वासघात किया गया। जर्मनी के साथ राष्ट्रीयता के सिद्धांत का पालन नहीं किया गया था।
6. **एकपक्षीय संधि -** संधि की शर्तें पूर्णतः एकपक्षीय थी। संधि मसौदा तैयार करते समय जर्मनी के साथ विचार-विमर्श की तो दूर की बात इसे सम्मेलन में आमंत्रित भी नहीं किया। एडम्स गिवन्स ने सही लिखा है ‘‘पराजित राष्ट्रों की अनुपस्थिति में यह संधि एकतरफा थी। इसकी शर्तों को कार्यान्वित करना केवल उसी समय तक संभव था जब तक कि वह शक्ति उसे कार्यान्वित कर सके।’’
7. **द्वितीय विश्वयुद्ध के बीज -** वर्साय की संधि कोई शांति संधि नहीं थी, द्वितीय विश्वयुद्ध के बीज इसमें स्पष्टतः मौजूद दिखाई दे रहे थे। चैम्बर्स एण्ड हैरिस ने लिखा है ‘‘शांति सम्मेलन ने एक विष वृक्ष के बीज का आरोपण किया जो 1939 ई. में एक विशाल संहारक वृक्ष के रूप में परिवर्तित हो गया और उसके कटु फलों को संपूर्ण संसार को बुरी तरह चखना पड़ा।’’ अतः यह सच है कि वर्साय की संधि प्रत्येक दृष्टि से अनुचित थी। यह संधि जर्मनी पर जबरदस्ती थोपी गई थी, जर्मनी को पंगू बनाने का प्रयास किया गया था।

### 1.2.4.3. आस्ट्रिया के साथ सेंट जर्मन की संधि, 10 सितंबर, 1919

पेरिस के समीप सेंट-जर्मन नामक स्थान पर 10 सितंबर, 1919 को आस्ट्रिया और मित्र राष्ट्रों के बीच संधि हुई। इसके द्वारा आस्ट्रिया-हंगरी का साम्राज्य भंग कर दिया गया और छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त हो गया था, जिसमें इटली, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लोविया, पोलैंड और रूमानिया आदि देश थे। इस संधि के अनुसार निम्नलिखित देशों को विभिन्न क्षेत्र प्राप्त हुए -

- इटली को आस्ट्रिया से दक्षिण टायरल, ट्रैंटिनो, ट्रीस्ट, इरिट्रिया, एवं डालमेशिया के तटवर्ती कुछ द्वीप प्राप्त हुए।
- चेकोस्लोवाकिया को वोहीमिया, मोराविया, आस्ट्रियन, साइलेशिया का अधिकांश भाग और आस्ट्रिया के दक्षिणी क्षेत्र का कुछ भाग प्राप्त हुआ।
- पोलैंड को मलेशिया का क्षेत्र प्राप्त हुआ।
- रूमानिया को वोकोविनया का प्रदेश प्राप्त हुआ।
- यूगोस्लाविया को डालमेशिया, बोस्निया, हर्जेगोविना आदि क्षेत्र प्राप्त हुए।

इस प्रकार अब आस्ट्रिया का क्षेत्रफल सिमटकर छोटा सा बचा और आबादी मात्र सत्तर लाख रह गई। इस संधि के अनुसार आस्ट्रिया को बाध्य किया गया कि वह युद्ध की ज़िम्मेदारी स्वीकार करे और इसके लिए जर्मनी की तरह एक बहुत बड़ी रकम मित्र राष्ट्रों को हर्जाने के रूप में दे।

आस्ट्रिया को युद्ध के अपराधियों को सौंपने के लिए कहा गया। अंततः सेंट-जर्मन की संधि की धारा 88 द्वारा आस्ट्रिया पर यह प्रतिबंध लगा दिया गया कि वह भविष्य में ऐसा कोई प्रयत्न न करे, जिसमें स्वतंत्र राज्य के रूप में उसका नामोनिशान मिट जाए।

### 1.2.4.4. बल्गारिया के साथ न्यूली की संधि, 27 नवंबर 1919

27 नवंबर, 1919 के पेरिस के पास न्यूली नामक स्थान पर मित्र राष्ट्रों तथा बल्गारिया के साथ संधि हुई। संधि के अनुसार -

- पश्चिमी थ्रेस (Thrace) का भाग यूनान को देना पड़ा। इससे उसकी बड़ी हानि हुई, क्योंकि थ्रेस के निकल जाने से एजियन सागर से उसका संबंध टूट गया।
- बल्गारिया की सेना की संख्या घटाकर 20,000 कर दी गई और उसकी नौ-सेना को भंग कर दिया गया।
- हर्जाने के रूप में एक भारी बड़ी रकम भी लाद दी गई।

### 1.2.4.5. हंगरी के साथ त्रियानों की संधि, 4 जून, 1920

युद्ध समाप्ति के पश्चात हंगरी की आंतरिक स्थिति इतनी अव्यवस्थित हो गई कि वहाँ कोई सरकार ही नहीं बन सकी। नवंबर, 1920 में वहाँ एक नई सरकार गठित की गई, जिसे मित्र राज्यों ने मान्यता दे दी। 4 जून, 1920 को हंगरी के प्रतिनिधि मंडल ने त्रियानो के राजमहल में संधि पर हस्ताक्षर कर दिए। इस संधि के अनुसार -

- हंगरी राज्य का बहुत सा भाग यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया और रूमानिया को दिया गया।
- यूगोस्लाविया को हंगरी, कोटिया, स्लावोनिया और वनाट का कुछ भाग दे दिया गया।
- चेकोस्लोवाकिया को कार्पोशियन पर्वत के दक्षिण और पूर्व की ओर स्थित कुछ भाग प्राप्त हुआ।
- रूमानिया को ट्रांसिलवानिया का प्रदेश और उसके पश्चिम में स्थित कुछ मैदानी भाग एवं वनाट का दो तिहाई भाग प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त आस्ट्रिया को और भी राज्य प्राप्त हुआ। विजित राज्यों में आस्ट्रिया को अत्यधिक राज्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार त्रियानों की संधि के अनुसार हंगरी का क्षेत्रफल एवं जनसंख्या बहुत कम रह गई। क्षेत्रफल 1,25,000 वर्ग मील की जगह 35,000 वर्ग मील तथा जनसंख्या 2 करोड़ की जगह 80 लाख रह गई। नौसेना भंग कर दी गई तथा सेना घटाकर 35,000 कर दी गई।

**1.2.4.6. तुर्की के साथ सेबे की संधि, 10 अगस्त, 1920**

पेरिस की संधियों में से यह अंतिम संधि थी। युद्ध में मित्र राज्यों ने गुप्त संधियों के द्वारा तुर्की के साम्राज्य को विभाजित करने का निश्चय कर लिया था। पेरिस के निर्णायकों का मुख्य उद्देश्य तुर्की साम्राज्य की समस्त अ-तुर्की जातियों को मुक्त करना था। इस संधि के अनुसार-

- तुर्की को मिश्र, सूडान, साइप्रस त्रिपोलीटानिया, मोरक्को, ट्यूनिस, अरब पेलेस्टाइन, मेसोपोटामिया तथा सीरिया पर अपने समस्त अधिकार छोड़ने पड़े।
- यूनान (ग्रीस) को पूर्वी थ्रेस का कुछ भाग और एजियन सागर में स्थित कुछ द्वीप प्राप्त हुए।
- डार्डेनलीज के जलमडरूमध्य को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र घोषित किया गया, परंतु कान्स्टेन्टीनोपल और उसके आसपास का भाग तुर्की के सुल्तान के अधीन बना रहा।
- तुर्की के आर्मीनिया को स्वतंत्र राज्य मान लिया और बुदिस्तान को आंतरिक स्वराज्य देने का वचन दिया।
- अरब में हिजाव के राज्यों को भी मान लिया गया। लेबनान, सीरिया, मेसोपोटामिया और पेलेस्टाईन का अधिदेशाधीन क्षेत्र बनाया गया। एशिया माइनर में केवल एनालेलिया का क्षेत्र तुर्की के अधीन बना रहा।

इस संधि के तहत एक बड़ा भू-भाग तुर्की के हाथ से निकल गया। यह संधि कार्यान्वित न हो सकी। मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में तुर्की में इस संधि के विरुद्ध एक जबरदस्तआंदोलन खड़ा हुआ। मुस्तफा कमाल पाशा ने खलीफा की शक्ति का अंत कर दिया।

**लोसान की संधि**

मित्र राष्ट्रों को मजबूर होकर 23 जुलाई, 1923 को तुर्की के साथ लोसान की संधि संपन्नकरनी पड़ी। इस संधि के द्वारा रमर्ना, थ्रेस, कान्स्टेन्टीनोपल तुर्की को वापस कर दिए गए। तुर्की की सार्वभौम सत्ता स्वीकार कर ली गई।

**1.2.5. सारांश**

बोस्निया की राजधानी सेराजेबो में आस्ट्रिया ने राजकुमार फ्रैंसिस फर्डिनैण्ड की पत्नी सहित हत्या के कारण आस्ट्रिया ने 28 जुलाई, 1914 ई. को सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। धीरे-धीरे यूरोप के देश इस युद्ध में शामिल होते गए और प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हो गया। इस युद्ध में एक ओर मित्र राष्ट्र(इंग्लैंड, फ्रांस एवं अमेरिका) थे तो दूसरी ओर जर्मनी के नेतृत्व में केंद्रीय शक्तियाँ थीं। युद्ध के प्रारंभ के समय अमेरिका तटस्थ था मगर जब जर्मनी ने अमेरिका के जहाज़ों को पनडुब्बियों द्वारा डुबाया तो अमेरिका भी जर्मनी के विरुद्ध मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया। अमेरिका के मित्र राष्ट्रों के साथ आने से उनकी स्थिति मजबूत हुई। जर्मनी एवं उसके साथी परास्त हुए। 1 नवंबर, 1918 ई. को युद्ध विराम हो गया।

युद्ध में हुई अपार जन-धन की हानि को देखते हुए भविष्य में विश्व शांति के उद्देश्य को लेकर 1919 ई. में पेरिस शांति सम्मेलन आयोजित किया गया। फ्रांस के क्लीमेंशु इंग्लैंड के लायड जार्ज एवं अमेरिका के वुडरो विल्सन इस सम्मेलन के प्रमुख कर्ता-धर्ता थे। मगर इनके बीच मतभेद के कारण विश्व शांति की स्थापना बाधित हुई। इंग्लैंड एवं फ्रांस ने जर्मनी पर वर्साय जैसी कठोर संधि आरोपित की। इस संधि की धाराएँ इतनी कठोर थीं कि मार्शल फॉच ने कहा था कि यह शांति संधि नहीं है यह तो20 वर्ष के लिए युद्ध विराम मात्र है। मार्शल फॉच की भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य साबित हुई। 28 जुलाई, 1919 ई. की इस संधि के पूरे 20 वर्ष बाद 1 सितंबर, 1939 ई. को पुनः द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया। इस द्वितीय विश्वयुद्ध के बीज पेरिस शांति सम्मेलन में जर्मनी पर आरोपित वर्साय की संधि की धाराओं में स्पष्टतः मौजूद थे।

### 1.2.6. बोध प्रश्न

1. प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् संपन्नपेरिस शांति सम्मेलन की विवेचना कीजिए।
2. विल्सन के 14 सूत्रों पर प्रकाश डालिए।
3. पेरिस शांति सम्मेलन के प्रमुख प्रतिनिधियों एवं उद्देश्यों की विवेचना कीजिए।
4. पेरिस शांति सम्मेलन में संपन्नसंधियों का वर्णन कीजिए।
5. वर्साय की संधि की धाराओं की विवेचना कीजिए।
6. वर्साय की संधि का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
7. 'यह संधि नहीं 20 वर्ष के लिए युद्ध विराम मात्र है' मार्शल फॉच के इस कथन के संदर्भ में वर्साय की संधि की विवेचना कीजिए।

### 1.2.7. संदर्भ ग्रंथ सूची


1. A. Tardieu, The Truth about the Treaty, 1921.
2. Brandenburg, From Bismark to the World War, London, 1938.
3. C. Bluch, The causes of War, 1935.
4. Cambridge Modern History, Vol. XII, Cambridge, 1938.
5. C.D.M. Ketelbey, A History of Modern Times, London, 1951.
6. G.P. Gooch, Before the War : Studies in Diplomacy, 1936.
7. G.P. Gooch, History of Modern Europe, London, 1951.
8. Grant and Temperely, Europe in the Nineteenth and Twentieth Centuries, London, 1950.
9. Hazen, Modern European History, New York.
10. Jackson, The between World War, London, 1947.
11. N. Manserg, The Comming of the First World War (1878-1914), 1949.
12. R. Lansing, The Big Four and others of the Peace Conference.
13. R.S. Baker, Wudro Wilson and the World Settlement, 3 Vol., 1923.
14. S.B. Fay, Origins of the War, 1923.
15. H.W.V. Temperly, A History of the Peace Conference, 3 Vol.

**16.** देवेन्द्र सिंह चौहान, यूरोप का इतिहास (1815-1919), मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ
**17.** देवेन्द्र सिंह चौहान, समकालीन यूरोप, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1986.
**18.** दीनानाथ वर्मा, आधुनिक यूरोप का इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन, पटना, 1993.
**19.** बी.के. श्रीवास्तव, विश्व इतिहास की विषय वस्तु, SBPD पब्लिकेशन, आगरा, 2007.

# खंड-3 : द्वितीय विश्वयुद्ध

## इकाई–1 : द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण एवं परिणाम

**इकाई की रूपरेखा**

**3.1.1. उद्देश्य**

**3.1.2. प्रस्तावना**

**3.1.3. द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण**

**3.1.4. द्वितीय विश्वयुद्ध का आरंभ एवं घटनाक्रम**

**3.1.4.1. द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रथम चरण**

**3.1.4.2. द्वितीय विश्वयुद्ध का द्वितीय चरण**

**3.1.4.3. द्वितीय विश्वयुद्ध का तृतीय चरण**

**3.1.4.4. द्वितीय विश्वयुद्ध का अंतिम चरण**

**3.1.5. द्वितीय विश्वयुद्ध का स्वरूप**

**3.1.6. द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम**

**3.1.7. सारांश**

**3.1.8. बोध प्रश्न**

**3.1.9. संदर्भ ग्रंथ सूची**

### 3.1.1. उद्देश्य

इस इकाई के लेखन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. इस तथ्य से अवगत कराना कि प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व शांति के अथक प्रयासों के बावजूद द्वितीय विश्व युद्ध क्यों प्रारंभ हुआ।
2. द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों को समझाना।
3. द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ एवं घटनाक्रम की जानकारी प्रदान करना।
4. द्वितीय विश्वयुद्ध के स्वरूप से परिचित कराना।
5. द्वितीय विश्व के परिणामों से अवगत कराना।
6. द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व में जो नवीन राजनीतिक परिदृश्य स्थापित हुआ उससे परिचित
7. कराना।

### 3.1.2. प्रस्तावना

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् पेरिस शांति सम्मेलन का मूलभूत उद्देश्य पराजित राष्ट्रों के साथ संधि करना एवं विश्व शांति की दिशा में कदम उठाना था। इस सम्मेलन मेंदो विरोधाभासी तथ्य सामने आए।

**(1)** वर्साय आदि अपमानजनक संधियों द्वारा विश्व राजनीति में द्वेष एवं प्रतिशोध का बीजारोपण किया गया।

**(2)** आगामी विश्व शांति के लिए राष्ट्र संघ की स्थापना की गई।

वर्साय संधि की कठोर धाराओं को देखकर मार्शल फॉच ने कहा था- 'यह शांति संधि नहीं 20 वर्ष के लिए युद्ध विराम मात्र है'। उसका कथन अक्षरशः सत्य साबित हुआ। 1919 ई. के पेरिस शांति सम्मेलन के ठीक 20 वर्ष बाद 1939 ई. में द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया।

वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी का जो अपमान हुआ था, उस अपमान के प्रतिशोध का बीड़ा हिटलर ने उठाया। उसके नेतृत्व में जर्मनी में नाजीवाद का उत्थान हुआ और हिटलर ने वर्साय की संधि की धज्जियाँ उड़ा दी। पेरिस शांति सम्मेलन से असंतुष्ट इटली के मुसोलिनी ने भी फासीवाद का उत्थान किया। वह हिटलर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो गया। सुदूर पूर्व में, 1921-22 ई. के वाशिंगटन सम्मेलन से असंतुष्ट, जापान भी इनके साथ मिला और 6 नवंबर 1937 को रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी का निर्माण किया।

जब जापान, इटली एवं जर्मनी तीनों देश क्रमशः मंचूरिया, अबीसीनिया एवं आस्ट्रिया पर कब्जा जमा कर साम्राज्य विस्तार की ओर अग्रसर हुए, तो पश्चिमी शक्तियाँ इंग्लैंड, फ्रांस एवं अमेरिका सशंकित हुए। 1 सितंबर 1939 को जैसे ही हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण किया। तब 3 सितंबर 1939 को इंग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हो गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान केंद्रीय शक्तियों जर्मनी, इटली एवं जापान ने काफी तबाही मचाई। अंततः अमेरिका को जापान के विरुद्ध परमाणु बम का इस्तेमाल करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस प्रकार विश्व को युद्ध की विभीषिका के साथ-साथ परमाणु बम की विभीषिका से भी गुजरना पड़ा।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् राष्ट्रसंघ से भी सशक्त संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। विश्व राजनीति में विभिन्न उपनिवेशों की जनता ने स्वतंत्रता आंदोलन चलाए। परिणाम स्वरूप इंग्लैंड, फ्रांस एवं जर्मनी आदि देशों ने अपने-अपने उपनिवेशों को स्वतंत्रता प्रदान की। इसके अलावा विश्व राजनीति में दो गुट उभर कर सामने आए। एक अमेरिका के नेतृत्व वाला पूँजीवादी गुट एवं द्वितीय रूस के नेतृत्व वाला साम्यवादी गुट।

### 3.1.3. द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण

पेरिस शांति सम्मेलन में 28 जून, 1919 ई. की वर्साय की अपमानजनक संधि के पश्चात् फ्रांस के मार्शल फॉच ने कहा था- 'यह शांति संधि नहीं20 वर्ष के लिए युद्ध विराम मात्र है।' उसकी यह भविष्यवाणी सत्य साबित हुई। इसी प्रकार एजवर्गर ने भी कहा था कि 'जर्मन जाति कष्ट सहेगी पर मरेगी नहीं'। अंततः जर्मन जाति के कष्टों को दूर करने का बीड़ा हिटलर ने उठाया। सर्वप्रथम उसने जर्मनी की सत्ता प्राप्त कर वहाँ अधिनायक तंत्र की स्थापना की। उसे इटली के मुसोलिनी एवं जापान के सैन्यवादियों का सहयोग मिला। इन सभी की अधिनायकवादी नीति ने एक बार पुनः विश्व को द्वितीय विश्व युद्ध की ज्वाला में झोंक दिया।

**(1) वर्साय संधि -** पेरिस शांति सम्मेलन में मित्र राष्ट्रों इंग्लैंड एवं फ्रांस द्वारा जर्मनी पर वर्साय जैसी अपमानजनक संधि आरोपित करना द्वितीय विश्वयुद्ध का एक प्रमुख कारण था। जर्मनी के अल्सास एवं लारेन प्रदेश वापस ले लिए। जर्मनी से सार घाटी का महत्वपूर्ण प्रदेश 15 वर्ष के लिए छीन लिया गया। जर्मनी की सामुद्रिक एवं नौसैनिक शक्ति को दुर्बल बना दिया गया। जर्मनी की जनता ने अपने आपको काफी अपमानित महसूस किया। जर्मन जनता प्रतिशोध की ज्वाला में जलने लगी। जब उन्हें हिटलर के रूप में एक अधिनायक मिला तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। हिटलर ने सत्ता प्राप्त कर वर्साय की संधि की धाराओं को तोड़ा।

सार की घाटी पुनः प्राप्त की। उसने जर्मन जनता से कहा था - मेरे समय युद्ध छिड़ जाना चाहिए। उसने जो कहा कर दिखाया। हिटलर के पोलैंड पर आक्रमण के साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया।

**(2) जर्मनी में उग्र राष्ट्रीयता -** जर्मनी में हिटलर के सत्ता में आते ही जर्मन जनता में अत्यधिक उत्साह का संचार हुआ। जर्मन जनता में जातीय उच्चता का तेजी से प्रसार हुआ। वे अपने को विश्व की सर्वश्रेष्ठ जाति समझने लगे। जर्मनी के उग्र विदेशनीति को अपनाते ही जर्मनी में उग्र राष्ट्रीयता के विकास ने द्वितीय विश्वयुद्ध का मार्ग प्रशस्त किया।

**(3) इटली एवं जापान में उग्रराष्ट्रवाद एवं सैन्यवाद का विकास-** 1919 ई. के पेरिस शांति सम्मेलन की स्थिति देखें तो इस सम्मेलन में फ्यूम न मिल पाने के कारण असंतुष्ट होकर इटली सम्मेलन का परित्याग कर लौट आया था। दूसरी ओर जापान को इस सम्मेलन द्वारा चीन में जर्मन क्षेत्र प्राप्त हुए थे। 1921-22 ई. के वाशिंगटन सम्मेलन ने जापान की पेरिस शांति सम्मेलन की उपलब्धियों को धो डाला। अब इटली की तरह जापान भी अत्यंत असंतुष्ट हो गया। इटली में मुसोलिनी के अधीन फासीवाद का उदय हुआ एवं जापान में सैन्यवादी शासन स्थापित हुआ। इस प्रकार इटली एवं जापान में उग्रराष्ट्रवाद एवं सैन्यवाद के विकास ने भी द्वितीय विश्वयुद्ध का मार्ग प्रशस्त किया।

**(4) प्रजातंत्रीय एवं एकतंत्रीय विचार धाराओं का विकास -** प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व दो विचारधाराओं में विभाजित हो गया। मित्र राष्ट्र इंग्लैंड, फ्रांस एवं अमेरिका प्रजातंत्र के समर्थक थे, तो दूसरी ओर धुरी राष्ट्र जर्मनी, इटली एवं जापान एकतंत्र के समर्थक थे। इन दो विचारधाराओं में बटे विश्व के बारे में मुसोलिनी ने कहा था - इन विचारों में समझौता होना असंभव है। इस संघर्ष के कारण हम रहेंगे या वे ही रहेंगे।

मुसोलिनी के इस कथन में द्वितीय विश्वयुद्ध का स्पष्टतः संकेत मिल रहा था। समस्त विश्व दो गुटों में विभाजित था। इन गुटों के मध्य बढ़ती ईर्ष्या, द्वेष, संदेह एवं घृणा ने अंततः समस्त विश्व को द्वितीय विश्वयुद्ध के द्वार पर ला खड़ा किया।

**(5) ब्रिटेन एवं फ्रांस में मतभेद-** यद्यपि प्रथम विश्वयुद्ध में ये दोनों विजयी राष्ट्र थे, पेरिस शांति सम्मेलन में ये दोनों ही प्रमुख कर्ता-धर्ता थे, तथापि इनमें आधारभूत मतभेद थे। फ्रांस जर्मनी को पूर्णतः पंगु बनानाचाहता था। इंग्लैंड कूटनीति से काम ले रहा था। वह शक्ति संतुलन बनाना चाहता था। एक ओर इंग्लैंड जर्मनी को कमजोर करना चाहता था तो दूसरी ओर वह फ्रांस को भी अधिक शक्तिशाली नहीं बनने देना चाहता था। इंग्लैंड की इस नीति का एवं इंग्लैंड व फ्रांस के मध्य दृष्टिकोण के अंतर का लाभ हिटलर ने उठाया। जर्मनी, जापान व इटली इन दोनों राष्ट्रों के मतभेद का लाभ उठाकर राष्ट्रसंघ की अवहेलना करते रहे। अंततः ब्रिटेन व फ्रांस के आपसी मतभेदों ने भी द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ में अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**(6) विश्वव्यापी आर्थिक मंदी -** 1929-30 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी भी अप्रत्यक्ष रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ के लिए जिम्मेदार थी। विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के कारण जर्मनी एवं इटली भी प्रभावित हुए। हिटलर एवं मुसोलिनी ने अपने देशों की सरकार को इस आर्थिक संकट से निपटने में असफल बताया

और जनता की सहानुभूति अर्जित की। जनता ने नाजीवादी एवं फासीवादी विचार धाराओं का समर्थन किया। हिटलर एवं मुसोलिनी ने वैधानिक रूप से सत्ता प्राप्त कर ली। आर्थिक संकट का लाभ उठाकर इटली ने अबीसीनिया पर एवं जापान ने मंचूरिया पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार ये देश द्वितीय विश्वयुद्ध की ओर कदम बढ़ाते रहे।

**(7) राष्ट्रसंघ की असफलता -** प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् अंतरराष्ट्रीय शांति की स्थापनार्थ अमेरिका के राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन की 14 सूत्रीय योजनानुसार राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई थी। अमेरिका ही राष्ट्रसंघ का सदस्य नहीं बना। इस संबंध में गैथान हार्डी ने सत्य ही लिखा था- 'एक बालक यूरोप के दरवाजे पर अनाथों की भाँति छोड़ दिया गया, जिसके चेहरे-मोहरे से अमेरिकन पैतृकता स्पष्टतः दिखाई दे रही थी।'

अमेरिका की अनुपस्थिति से इंग्लैंड एवं फ्रांस ने राष्ट्रसंघ कोअपनी कूटनीति का अखाड़ा बनाया। राष्ट्रसंघ के प्रति विभिन्न देशों में अविश्वास की भावना व्याप्त थी। जर्मनी ने इसे 'विजेता राष्ट्रों का संघ कहा', इटली ने इसे 'संतुष्ट राष्ट्रों का संघ, रूस के लेनिन ने इसे 'पूँजीवाद हथियार' कहा।

राष्ट्रसंघ की असफलता इन शब्दों में उजागर होती है - 'जहाँ वियेना विवाद ने राष्ट्रसंघ की विवशता को उजागर किया वहीं मंचूरिया संकट संघ की दुर्बलता का घोतक बना। इसके बाद कोर्फू विवाद ने राष्ट्रसंघ को पूर्णतः नपुंसक बना दिया। रही सही कसर हिटलर ने पूर्णकर राष्ट्रसंघ की अंतयेष्टि कर दी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जो राष्ट्रसंघ आगामी युद्ध की स्थिति रोकने के लिए बना था वही राष्ट्रसंघ की असफलता अंततः द्वितीय विश्वयुद्ध का अप्रत्यक्ष कारण बनी।

**(8) मोर्चाबंदी -** जर्मनी, इटली एवं जापान की 1930 ई. के पश्चात् की विस्तारवादी कार्यवाहियों ने विभिन्न राष्ट्रों के बीच असुरक्षा का भाव जाग्रत किया। विभिन्न राष्ट्र अपनी सुरक्षा, सैन्य तैयारियों एवं मोर्चाबंदी में लग गए। जिस प्रकार 10 मई 1871 की फ्रेंकफर्ट संधि के पश्चात् जर्मनी को फ्रांस के आक्रमण का भय था उसी प्रकार 28 जून 1919 ई. को वर्साय की संधि के पश्चात् फ्रांस को जर्मनी के प्रतिशोध का भय सता रहा था। इसी भय को दूर करने के लिए फ्रांस ने अपनी उत्तर-पूर्वी सीमा पर जमीन के नीचे किलों की एक श्रृंखला बनाई जिसे 'मैजिनो लाइन' कहा गया। क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया स्वरूप जर्मनी ने भी अपनी सीमा पर किलेबंदी की जिसे 'सीजफाइड लाइन' कहा जाता है। इस प्रकार की मोर्चाबंदियों ने द्वितीय विश्वयुद्ध को अनिवार्य बना दिया।

**(9) हिटलर की विदेश नीति -** हिटलर की आक्रामक विदेश नीति द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए पूर्णतः जिम्मेदार थी। उसने जर्मन जनता को स्वयं विश्वास दिलाया था कि 'मेरे समय युद्ध छिड़ जाना चाहिए' इससे स्पष्ट है कि हिटलर तो द्वितीय विश्व युद्ध के छिड़ने का ही इंतजार कर रहा था। समस्त विश्व को स्तब्ध करने वाली हिटलर की विदेश नीति के प्रमुख पड़ाव यह थे - आस्ट्रिया का जर्मनी में विलय, चेकोस्लोवाकिया का अंग-भंग, लिथुआनिया से मेमल प्रदेश छीनना, एवं पौलैंड के गलियारे एवं डेजिंग बंदरगाह को छीनने का प्रयास। इस प्रकार हिटलर की विदेश नीति ने विश्व को एक ऐसे विश्वयुद्ध की ओर अग्रसर किया जहाँ से वापस लौट पाना नामुमकिन था।

**(10) द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण -** हिटलर अपनी आक्रामक विदेश नीति के तहत जब भी किसी देश को या उसके भाग को हड़पता था तो इंग्लैंड को यह कह कर संतुष्ट करता था कि- 'वह तो यह कार्यवाही रूस के साम्यवादी विस्तार को रोकने के लिए कर रहा है।' पूँजीवादी देश इंग्लैंड एवं फ्रांस इस समय रूस के साम्यवादी विस्तार से अत्यधिक चिंतित थे। इसी कारण वे हिटलर की आक्रामक कार्यवाहियों के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपना रहे थे। हिटलर इसका फायदा उठा रहा था।

1 सितंबर, 1939 ई. को हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण किया। इस समय तक इंग्लैंड की जनता तुष्टीकरण की नीति की विरोधी हो गई थी। फ्रांस में भी भयकी भावना व्याप्त थी। अतः इंग्लैंड के चैम्बरलेन ने हिटलर को चेतावनी दी कि वह फौरन पौलैंड से सेना वापस बुलाए। हिटलर को अपने कदम पीछे हटाने की आदत नहीं थी, उसने इसे इंग्लैंड की कोरी धमकी माना। मगर यह कोरी धमकी नहीं थी। इंग्लैंड ने जो कहा वह कर दिखाया। इंग्लैंड ने 3 सितंबर 1939 ई. को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध आरंभ कर दिया। इस प्रकार हिटलर का पौलैंड पर आक्रमण ही द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण बना।

## 3.1.4. द्वितीय विश्वयुद्ध का आरंभ एवं घटनाक्रम

1 सितंबर 1939 ई. को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया। इंग्लैंड के प्रधानमंत्री चेम्बरलेन ने हिटलर को चेतावनी दी कि वह शीघ्र ही पोलैंड से अपनी सेना वापस बुलाए। हिटलर ने इसे मात्र एक धमकी माना और इंग्लैंड की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। चूँकि हिटलर इससे पूर्व भी कई आक्रामक कार्यवाही करता रहा था और इंग्लैंड ने उसके प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाई थी। अतः हिटलर ने इंग्लैंड की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया।

हिटलर की उम्मीद के विपरीत जब हिटलर ने पोलैंड से सेना नहीं हटाई तो 3 सितंबर 1939 को इंग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

इस प्रकार अंततः द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो ही गया। इस युद्ध के मुख्यतः चार चरण थे। इन चार चरणों का घटनाक्रम इस प्रकार है –

### 3.1.4.1. द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रथम चरण

द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रथम चरण 1 सितंबर, 1939 ई. से 21 जून, 1941 ई. तक माना गया है। इस प्रथम चरण में हिटलर ने पोलैंड, डेनमार्क, नीदरलैंड, बेल्जियम, लग्जेमबर्ग, फ्रांस, ब्रिटेन, यूनान तथा क्रीट पर आक्रमण किया।

#### पोलैंड पर आक्रमण

शुक्रवार 1 सितंबर, 1939 ई. को प्रातः चार बजे जब सारा यूरोप सो रहा था, उसी समय हिटलर ने तीव्रगति से पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। अपने तमाम प्रतिरोध के बावजूद पोलैंड परास्त हुआ। 26 सितंबर, 1939 ई. को पोलैंड को युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर करने को बाध्य होना पड़ा। यह युद्ध27 दिन तक चला।

**इंग्लैंड में सत्ता परिवर्तन**

इंग्लैंड ने जब 3 सितंबर, 1939 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध आरंभ कर दिया था उस समय चेम्बरलेन ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे। युद्ध में निरंतर जर्मनी की सफलता के कारण10 मई, 1940 को चेम्बरलेन ने स्तीफा दे दिया। अब 11 मई, 1940 को विंस्टन चर्चिल इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बने। विंस्टन चर्चिल एक कुशल युद्ध नेता थे। उन्होंने कुशलता के साथ युद्ध का संचालन किया।

**जर्मनी का हॉलैंड पर अधिकार**

जिस दिन इंलैंड में चेम्बरलेन ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दिया उसी दिन 10 मई, 1940 को इंलैंड ने हालैंड पर आक्रमण किया। 14 मई को हालैंड का पतन हो गया। 10 मई को ही हिटलर की सेना ने बेल्जियम पर भी आक्रमण किया। 5 दिन में ही बेल्जियम ने भी आत्मसमर्पण कर दिया।

**फ्रांस पर आक्रमण**

7 जून को जर्मन सेनाओं ने तेजी के साथ फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। फ्रांस की 'मैजीनो रेखा' के विशाल टैंक जर्मन सेना का मुकाबला न कर सके। चूँकि इस समय इंग्लैंड स्वयं मुसीबत में था अतः वह भी कुछ सहायता न कर सका। 8 जून, 1940 को जर्मनी ने पेरिस नगर पर अधिकार कर लिया। 22 जून, 1940 को फ्रांस ने घुटने टेक दिए। जर्मनी एवं हिटलर के लिए यह एक महान जीत थी। वर्साय की संधि के अपमान के धब्बे को उन्होंने धो दिया। वर्साय की संधि का प्रतिशोध फ्रांससे जर्मनी ने ले लिया।

**इंग्लैंड पर आक्रमण**

फ्रांस को परास्त कर जर्मनी ने 8 अगस्त, 1940 को इंलैंड पर आक्रमण किया। मगर इंलैंड की शक्तिशाली सेना ने इस आक्रमण का करारा जबाब दिया।

**वाल्टिक देशों पर आक्रमण**

फ्रांस एवं इंलैंड के पश्चात् जर्मनी ने रूस के बाल्टिक राज्यों पर आक्रमण किया। लिथुआनिया, लटेविया एवं एस्टोनिया पर अधिकार कर लिया। उधर इटली ने यूनान एवं उत्तरी अफ्रीका पर आक्रमण किया।

**जापान का धुरी राष्ट्रों से मिलना**

जापान भी धुरी राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध में शामिल हो गया। जापान ने द्वितीय विश्वयुद्ध का फायदा उठाकर सुदूर पूर्व में अधिकार कर वृहत्तर पूर्वी एशिया के निर्माण का कार्य जारी किया।

**3.1.4.2. द्वितीय विश्वयुद्ध का द्वितीय चरण**

द्वितीय विश्वयुद्ध का द्वितीय चरण 22 जून, 1941 ई. से 6 दिसंबर, 1941 तक चला।

**रूस पर आक्रमण**

द्वितीय विश्वयुद्ध का द्वितीय चरण 22 जून, 1941 ई. को हिटलर के रूस पर आक्रमण के साथ आरंभ हुआ। एक साथ 4 नाजी सेनाओं ने मास्को, कीव, लेनिनग्राड एवं ओडेसा की ओर तीव्रता से बढ़ना आरंभ किया। इन परिस्थितियों में इंग्लैंड ने रूस से संधि की और अमेरिका ने रूस को खाद्य एवं युद्ध समग्री पहुँचाई।

**जापान का अमेरिका पर आक्रमण**

जब जर्मनी के विरुद्ध इंग्लैंड व अमेरिका ने रूस की मदद की तो जापान ने जर्मनी के पक्ष में अमेरिका पर आक्रमण किया। 7 दिसंबर, 1941 को जापान ने अमेरिका के नाविक केंद्र हवाई द्वीप पर एकाएक आक्रमण कर वहाँ उपस्थित अमेरिकी जहाजों को नष्ट कर दिया। जापान के इस आक्रमण से अमेरिका भी द्वितीय विश्वयुद्ध में शामिल हो गया।

अब यह युद्ध पूरी तरह एक द्वितीय महायुद्ध का रूप ले चुका था। एक ओर जर्मनी-इटली एवं जापान थे तो दूसरी ओर इंग्लैंड, फ्रांस, रूस एवं संयुक्त राज्य अमेरिका थे।

जापान काफी तीव्रता से आगे बढ़ा। उसने हांगकांग, फिलीपाइन्स, मलाया, सिंगापुर को रौंद दिया। यही नहीं उसने भारत के कलकत्ता पर भी बम वर्षाए।

**3.1.4.3. द्वितीय विश्वयुद्ध का तृतीय चरण**

द्वितीय विश्वयुद्ध का तृतीय चरण 7 दिसंबर, 1941 ई. से 8 नवंबर, 1942 ई. तक चला। यह तृतीय चरण मूलतः जापान के पर्लहार्वर पर आक्रमण के पश्चात् आरंभ हो गया। पर्लहार्वर के पश्चात् जापान ने हांगकांग, गुआम एवं थाइलैंड पर अधिकार कर लिया। जनवरी, 1942 ई. में जापान ने मलाया पर एवं 15 दिसंबर, 1941 को सिंगापुर पर भी अधिकार कर लिया। मार्च, 1942 तक जापान ने रंगून पर अधिकार कर लिया।

**रूस पर जर्मन आक्रमण**

19 नवंबर, 1942 को रूस पर पुनः जर्मनी ने आक्रमण कर दिया। उसने स्टालिनग्राड का घेरा डाला। यह एक अत्यधिक रक्तरंजित एवं लंबा युद्ध था। रूस ने करारा जवाब दिया और जर्मनी को परास्त कर दिया। सोवियत सेना नाजी सेना को रौंदती हुई बर्लिन जा पहुँची। यह एक महान सफलता थी। रूस ने मित्र राष्ट्रों की जीत सुनिश्चित कर दी।

**3.1.4.4. द्वितीय विश्वयुद्ध का चतुर्थ चरण**

द्वितीय विश्वयुद्ध का चतुर्थ एवं अंतिम चरण 8 नवंबर, 1942 से 14 अगस्त, 1945 तक चला।

चतुर्थ चरण में द्वितीय विश्वयुद्ध का परिदृश्य पूर्णतः बदल चुका था। रूस द्वारा जर्मनी की पराजय द्वितीय विश्व युद्ध का परिवर्तन बिंदु साबित हुआ।

**इटली की पराजय**

मित्र राष्ट्रों ने अपनी सेना की संयुक्त कमान जनरल आइजन हावर को सौंपी। जनरल आइजन हावर एवं जनरल मांटगुमरी ने जर्मनी एवं इटली की सेनाओं पर आक्रमण किया। ट्यूनिशिया पर उनके आक्रमण से इटली चिंतित हो गया। उसने हिटलर से सहायता माँगी। मगर 5 मई, 1943 को जर्मन सेनाओं ने घुटने टेक

दिए। 12 मई को मित्र राष्ट्रों ने ट्यूनिशिया पर अधिकार कर लिया। सिसली को अधिग्रहित कर 25 जुलाई, 1943 को मुसोलिनी को अपदस्थ किया और उसे बंदी बना लिया। 4 जून, 1943 को रोम पर मित्र राष्ट्रों का कब्जा हो गया। मुसोलिनी को 24 अप्रैल, 1945 को गोली मार दी गई।

**जर्मनी की पराजय**

इटली पर आधिपत्य के पश्चात् मित्र राष्ट्रों की विजय का सिलसिला जारी रहा। फरवरी, 1945 में मित्र राष्ट्रों ने तीन तरफ से जर्मनी पर आक्रमण किया। जर्मनी बड़ी बहादुरी से लड़ा मगर परास्त हुआ। 30 अप्रैल, 1945 को हिटलर ने अपनी पत्नी सहित आत्महत्या कर ली। 7 मई, 1945 को जर्मनी ने मित्र राष्ट्रों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। रूस अमेरिका, फ्रांस व इंग्लैंड ने युद्ध पश्चात् जर्मनी को चार भागों में बाट दिया।

**जापान की पराजय**

मित्र राष्ट्र जब इटली एवं जर्मनी में उलझे हुए थे उस समय इनकी पश्चिम में व्यस्तता का लाभ उठाकर जापान पूर्वी एशिया में विस्तार कर रहा था। इटली एवं जर्मनी की पराजय के पश्चात् मित्र राष्ट्रों ने मुख्यतः अमेरिका ने पूरा ध्यान जापान पर केंद्रित किया।

6 अगस्त, 1945 को अमेरिकी वायु सेना ने हिरोशिमा पर एवं 9 अगस्त, 1945 को जापान के नगर नागासाकी पर अणुबम गिराए। अणुबम का विस्फोट अत्यंत विनाशकारी था। अब जापान के समक्ष आत्मसमर्पण के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प न था। यह अणुबम अमेरिकी वायुयान बी-19 द्वारा गिराए गए थे। 14 अगस्त, 1945 को जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध पूर्णतः समाप्त हो गया।

इस प्रकार 1 सितंबर, 1939 को आरंभ द्वितीय विश्वयुद्ध पूरे 6 वर्ष चला और 14 अगस्त, 1945 को जापान के आत्मसमर्पण के साथ समाप्त हुआ।

### 3.1.5. द्वितीय विश्वयुद्ध का स्वरूप

1 सितंबर, 1939 से प्रारंभ होकर 14 अगस्त, 1945 तक पूरे 6 वर्ष चलने वाले द्वितीय विश्वयुद्ध का स्वरूप कई मायनों में प्रथम विश्वयुद्ध से भिन्न था। यहाँ उल्लेखनीय तथ्य यह है कि दोनों ही विश्वयुद्धों में केंद्रीय शक्ति तो जर्मनी ही रहा मगर प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी का चांसलर बिस्मार्क युद्ध नहीं चाहता था। द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी का राइखफ्यूरर हिटलर युद्ध चाहता था। बिस्मार्क यदि यूरोप में शांति एवं शक्ति संतुलन चाहता था तो हिटलर वर्साय की अपमानजनक संधि का प्रतिशोध लेना चाहता था। प्रथम विश्व युद्ध का आरंभ आस्ट्रिया ने किया था, चूँकि जर्मनी आस्ट्रिया के साथ संधि से बँधा हुआ था। अतः वह भी आस्ट्रिया के पक्ष में युद्ध में सम्मिलित हो गया।

द्वितीय विश्व युद्ध में युद्ध का आरंभ हिटलर द्वारा ही किया गया था। इस विश्वयुद्ध ने शीघ्र ही एक व्यापक स्वरूप ग्रहण कर लिया। चूँकि युद्ध के पूर्व ही इटली, जर्मनी व जापान के मध्य रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी का निर्माण हो चुका था। अतः जर्मनी के पक्ष में इटली एवं जापान भी सम्मिलित हो गए। इस कारण यह युद्ध मात्र यूरोप तक सीमित न रह कर सुदूर पूर्व में भी फैल गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के स्वरूप का एक रोचक पहलू यह था कि प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् मित्र राष्ट्र रूस के साम्यवाद के प्रसार से भयभीत थे। इस भय का फायदा हिटलर एवं जापान ने उठाया। वे जब भी किसी राष्ट्र पर आक्रमण करते तो मित्र राष्ट्रों को यह कह कर शांत कर देते थे कि वे तो ऐसा रूस के साम्यवादी प्रसार को रोकने हेतु कर रहे हैं। मित्र राष्ट्रों की इसी तुष्टीकरण की नीति के कारण अंततः द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया। जिस रूस के विरोध में मित्र राष्ट्रों ने हिटलर के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनायी, युद्ध के दौरान उसी रूस के पक्ष में मित्र राष्ट्र आ गए। रूस ने ही सर्वप्रथम जर्मनी को परास्त कर मित्र राष्ट्रों की विजय का मार्ग प्रशस्त किया। पूँजीवादी अमेरिका भी साम्यवादी रूस के पक्ष में युद्ध के दौरान आ गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के स्वरूप की यह एक अद्भुत मिसाल थी कि पूँजीवादी मित्र राष्ट्र एवं साम्यवादी रूस एकजुट होकर अधिनायकवादी शक्तियों जर्मनी-इटली एवं जापान का मुकाबला कर रहे थे। जाहिर है कि इस समय मित्र राष्ट्रों के लिए साम्यवाद से कहीं अधिक खतरनाक अधिनायकवाद नजर आ रहा था।

यहाँ हम देखते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान विरोधी गुटों के स्वरूप में भी विभिन्नता थी। जर्मनी सहित धुरी राष्ट्र अधिनायकवादी विचारधारा के थे तो मित्र राष्ट्र एवं रूस पूँजीवादी एवं साम्यवादी विचारधारा के थे। अधिनायकवादी विचारधारा के खिलाफ युद्ध में पूँजीवादी एवं साम्यवादी विचारधाराएँ एक हो गई। वस्तुतः यह परिस्थिति की माँग थी। यहाँ साम्यवादी विचारधारा के प्रसार से अधिक बड़ा खतरा मित्र राष्ट्रों को हिटलर के रूप में दिखाई दे रहा था।

इंग्लैंड-फ्रांस एवं अमेरिका यूरोप में तो संयुक्त रूपमें अधिनायकवादी शक्तियों का मुकाबला कर सकते थे मगर सुदूर पूर्व में जर्मनी-जापान की सम्मिलित शक्ति का सामना करने हेतु उन्हें एक साथी की अत्यंत आवश्यकता थी। यह साथी उन्हें रूस के रूप में मिला। निहित स्वार्थ एवं आवश्यकता के आगे रूस का साम्यवादी होना गौण हो गया और इस प्रकार परिस्थितियों ने ब्रिटेन-फ्रांस, अमेरिका एवं रूस को एक साथ ला दिया। पारस्परिक विरोधी विचारधाराओं के एक साथ आने से युद्ध के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ। जर्मनी जीती बाजी हार गया। अभी तक जो जर्मनी फ्रांस एवं इंग्लैंड पर भारी पड़ रहा था उसे रूस ने करारी शिकस्त दी। इस के साथ ही मित्र राष्ट्रों का पलड़ा भारी हो गया और विजयश्री ने उनका वरण कर लिया।

द्वितीय विश्वयुद्ध का स्वरूप प्रथम विश्वयुद्ध से अधिक खतरनाक एवं रक्तरंजित था। इस युद्ध में जान-माल की अत्यधिक हानि हुई। अमेरिका द्वारा जापान पर अणु बम गिराने की घटना ने द्वितीय विश्वयुद्ध के स्वरूप को और अधिक भयानक एवं वीभत्स बना दिया। एटम बम के प्रयोग ने मानव जाति को विनाश के कगार पर पहुँचा दिया। 1949 ई. तक जो बम मात्र अमेरिका के पास ही था उस आधिपत्य को रूस ने 22 सितंबर, 1949 को अणु विस्फोट कर चुनौती दी। इस प्रकार इस विश्वयुद्ध के स्वरूप ने विश्व को शस्त्रास्त्रों की होड़ के साथ अणु बम निर्माण की होड़ में भी संलग्न कर दिया। आज भी विश्व इस समस्या से जूझ रहा है।

### 3.1.6. द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम

6 वर्ष तक चलने वाले द्वितीय विश्वयुद्ध का स्वरूप अत्यंत व्यापक, क्रूर, रक्तरंजित, वीभत्स एवं विनाशकारी था। इस युद्ध के परिणाम दूरगामी सिद्ध हुए। इसके परिणामों ने विश्व इतिहास को गहराई के साथ प्रभावित किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रमुख परिणाम निम्नानुसार थे -

1. **जन-धन का व्यापक विनाश -** यह एक अत्यंत विनाशकारी युद्ध सिद्ध हुआ। इस युद्ध में अत्यंत जन-धन की हानि हुई। दोनों ही युद्धरत पक्षों को भारी नुकसान हुआ। युद्धरत राष्ट्रों की लगभग 2,000 करोड़ की

संपत्ति नष्ट हो गई। सर्वाधिक आर्थिक हानि रूस को हुई। उसकी राष्ट्रीय संपत्ति का एक चौथाई भाग नष्ट हो गया। इसका मूल्य लगभग 1 खरब 28 करोड़ डालर था। यही नहीं रूस के लगभग 70 लाख नागरिक मारे गए। रूस के हजारों नगर एवं गाँव पूर्णतः बर्बाद हो गए। इंग्लैंड के 4 लाख 45 हजार एवं फ्रांस के3 लाख 80 हजार नागरिक मारे गए। इस प्रकार इस विश्वयुद्ध में मरने वालों की कुल संख्या 2 करोड़ 50 लाख तक जा पहुँची। अरबों रूपये की धन-संपत्ति नष्ट हो गई। कई राष्ट्र तबाह हो गए। उनकी अर्थव्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई। संपूर्ण विश्व पर विनाश की कालिमा आच्छादित हो गई।

2. **सामाजिक आर्थिक प्रभाव** - विश्वयुद्ध के फलस्वरूप विश्व में प्रायः अधिकांश वस्तुओं का अभाव हो गया। राष्ट्रों ने अपने यहाँ माल की आपूर्ति हेतु अमेरिका से समान मँगवाया। इस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था को बल मिला। यूरोप में एक नवीन सामाजिक व्यवस्था का आर्विभाव हुआ। जर्मनी को अपनी जातीय उच्चता का अभिमान अब त्यागना पड़ा।
3. **साम्राज्यवाद का अंत** - इस युद्ध में यूरोपीयराष्ट्रों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। अब उनके पास इतनी शक्ति नहीं बची कि वे सुदूर देशों में अपने उपनिवेशों के साम्राज्यों को सुरक्षित रख पाते। उधर उनके उपनिवेशों में भी स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ हुए। यूरोपीय राष्ट्र इन स्वतंत्रता आंदोलनों का दमन करने में असमर्थ थे। इस तरह युद्ध के पश्चात् उपनिवेशों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। साम्राज्यवाद का अंत हुआ। इंग्लैंड को अपने उपनिवेशों - भारत, वर्मा, मलाया एवं मिस्र आदि को स्वतंत्रता प्रदान करना पड़ी।
4. **परमाणु युग का सूत्रपात** - अमेरिका ने जापान के नगरों- हिरोशिमा एवं नागासाकी पर 6 एवं 9 अगस्त 1945 में अणु बम गिराकर विश्व में परमाणु युग का सूत्रपात किया। 22 सितंबर, 1949 को रूस ने भी अणु विस्फोट कर अमेरिका के वर्चस्व को चुनौती दी। इस प्रकार विश्व में परमाणु युग का सूत्रपात हुआ।
5. **रूस का शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उदय** - इस विश्वयुद्ध में यदि सर्वाधिक हानी रूस को उठानी पड़ी तो युद्ध पश्चात् सर्वाधिक लाभ भी रूस को ही मिला। रूस को आधा पोलैंड, एण्टोनिया, लिथुआनिया एवं फिनलैंड का भाग प्राप्त हुआ। बाल्कन क्षेत्र में रूस का प्रभाव बढ़ा। रूस ने बाल्कन क्षेत्र, रूमानिया, अल्बानिया एवं यूगोस्लाविया में साम्यवादी सरकारें स्थापित की। एक बार पुनः यूरोपीय देश साम्यवादी प्रभाव से भयभीत हुए।
6. **अमेरिका द्वारा विश्व को नेतृत्व** - द्वितीय विश्वयुद्ध में इंग्लैंड के स्थान पर अमेरिका एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरकर सामने आया। अब विश्व में दो ही शक्तिशाली राष्ट्र रह गए। पूर्व में रूस एवं पश्चिम में अमेरिका। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अमेरिका एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरा और उसने पश्चिमी राष्ट्रों को नेतृत्व प्रदान किया।
7. **चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना** - चीन में साम्यवादियों ने अमेरिका समर्थक च्याँग काई शेक के विरुद्ध संघर्ष तीव्र किया। अंततः उसे परास्त कर 1949 ई. में चीन में माओत्से तुंग के नेतृत्व में साम्यवादी सरकार स्थापित हुई। चाऊ एन लाई उस सरकार के प्रधानमंत्री बने।
8. **शीत युद्ध का आरंभ** - अमेरिका एवं रूस के विश्वशक्ति में उभरते ही द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व दो खेमों में विभाजित हो गया। इस प्रकार पूँजीवादी अमेरिका एवं साम्यवादी रूस के मध्य एक प्रकार का तनाव रूपी शीत युद्ध आरंभ हो गया।
9. **जर्मनी का विभाजन** - 1945 में चारों ओर से जर्मनी पर विश्वयुद्ध के दौरान आक्रमण हुआ। पूर्व की ओर रूस ने तीव्रगति से लगभग आधे जर्मनी पर अधिकार कर लिया। पश्चिमी जर्मनी पर इंग्लैंड, फ्रांस एवं

अमेरिका ने अधिकार कर लिया। इस प्रकार जर्मनी का विभाजन हो गया। जर्मनी का विभाजन युद्ध पश्चात् एक जटिल समस्या हो गई।

10. **संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय-** जिस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर राष्ट्र संघ की स्थापना की गई थी उसी तरह द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के बारे में 7 दिसंबर 1944 ई. को अमेरिका, ब्रिटेन, रूस एवं चीन के प्रतिनिधियों ने वाशिंगटन के पास डम्बरटन में एक सम्मेलन में निर्णय लिया। उनके इस निर्णय के अनुसार 14 अक्टूबर 1949 ई. को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। इस संस्था का उद्देश्य विश्वयुद्ध के वातावरण को समाप्त कर विभिन्न राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक मैत्री का भाव बढ़ाना था। संयुक्त राष्ट्र संघ की विभिन्न शाखाओं द्वारा कई मानवोपयोगी कार्य हाथ में लिए गए। राष्ट्र संघ में जो कमजोरियाँ थीं, उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ में दूर किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्वयुद्ध की एक महान देन है। तबसे लेकर आज तक संयुक्त राष्ट्रसंघ अपने उद्देश्यों की पूर्ति में निरंतर लगा हुआ है।

### 3.1.7. सारांश

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् 1919 ई. में पेरिस में शांति सम्मेलन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन के प्रमुख कर्ताधर्ता ब्रिटेन के लायड जार्ज एवं फ्रांस के क्लीमेंशु थे। वस्तुतः इस सम्मेलन का नाम भले ही शांति सम्मेलन हो मगर इसने अशांति अधिक फैलाई। इस सम्मेलन से सर्वाधिक असंतुष्ट राष्ट्र जर्मनी था। इटली भी इस सम्मेलन से असंतुष्ट होकर सम्मेलन को बीच में ही छोड़कर वापस आ गया था। जापान इस सम्मेलन से थोड़ा संतुष्ट था मगर 1921-22 के वाशिंगटन सम्मेलन ने उसे असंतुष्ट कर दिया। इन सभी के असंतोष के प्रमुख कारण ब्रिटेन एवं फ्रांस थे। जापान अमेरिका से अधिक असंतुष्ट था।

जर्मनी, इटली एवं जापान के इस असंतोष ने इनके यहाँ क्रमशः नाजीवाद, फासीवाद एवं सैन्यवाद का मार्ग प्रशस्त किया। इन्होंने आक्रमक विदेश नीति अपना कर विश्व को सशंकित कर दिया। ये साम्यवाद के प्रसार को रोकने का बहाना बना कर विभिन्न देशों पर अधिकार करते रहे। 1 सितंबर, 1939 को इसी नीति पर चलकर जैसे ही जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया। इंग्लैंड, पोलैंड के पक्ष में 3 सितंबर, 1939 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में आ गया। इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया।

इस विश्वयुद्ध में एकतरफ धुरी राष्ट्र जर्मनी, इटली-जापान थे तो दूसरी ओर ब्रिटेन-फ्रांस रूस एवं अमेरिका थे। युद्ध के प्रारंभिक चरण में जर्मनी ने फ्रांस को परास्त कर उस पर कब्जा जमा लिया। इंग्लैंड को भी करारी टक्कर दी। मगर जर्मनी ने जब रूस पर आक्रमण किया तो रूस ने जर्मनी को करारी शिकस्त दी। इसके पश्चात् युद्ध का रूख ही बदल गया। मित्र राष्ट्र विजय हासिल करते गए और धुरी राष्ट्रों को पराजय का सामना करना पड़ा।

हिटलर अपनी पराजय सहन न कर सका अतः उसने अपनी पत्नी सहित 30 अप्रैल, 1945 को आत्महत्या कर ली। मुसोलिनी को बंदी बना लिया गया। 24 अप्रैल, 1945 को मुसोलिनी को गोली मार दी गई। 6 अगस्त एवं 9 अगस्त, 1945 को अमेरिका के बी-19 विमान ने जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी पर बम गिराये। अंततः 14 अगस्त, 1945 को जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप विश्व शांति की स्थापना हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। अमेरिका एवं रूस शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व रंगमंच पर अवतरित हुए। ये क्रमशः पूँजीवादी एवं साम्यवादी विचारधारा के पोषक थे जो कि परस्पर विरोधी थीं। परिणामस्वरूप इन दोनों के मध्य शीत युद्ध आरंभ हुआ। ब्रिटेन, फ्रांस एवं हालैंड आदि देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी। अब ये उपनिवेशों पर नियंत्रण बनाए रखने में समर्थ न थे। फलतः धीरे-धीरे विश्व में इनके उपनिवेशों ने स्वतंत्रता प्राप्त की। विश्व के इतिहास में इस प्रकार एक नवीन राजनीतिक परिदृश्य उभर कर सामने आया।

### 3.1.8. बोध प्रश्न

1. 'यह शांति संधि नहीं20 वर्ष के लिए युद्ध विराम मात्र है' मार्शल फॉच के इस कथन के विशेष संदर्भ में द्वितीय
2. विश्वयुद्ध के आरंभ कीपृष्ठभूमि की विवेचना कीजिए?
3. द्वितीय विश्वयुद्ध के कारणों का वर्णन कीजिए।
4. द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ एवं घटनाक्रम पर प्रकाश डालिए।
5. द्वितीय विश्वयुद्ध के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।
6. द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों की विवेचना कीजिए।
7. द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् नवीन राजनीतिक परिदृश्य पर प्रकाश डालिए।
8. द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण एवं परिणामों का वर्णन कीजिए।
9. द्वितीय विश्वयुद्ध के घटनाक्रम एवं स्वरूप की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

### 3.1.9. संदर्भ ग्रंथ सूची


1. Dhar, Europe between two world wars, Madras, 1951.
2. G.P. Gooch, History of Modern Europe, London, 1951.
3. Grant and Temperley, Europe in the 19th and 20th Century, London, 1950.
4. Hazen, Modern European History, New York, 1938.
5. Jackson, The Between War World, London, 1947.
6. Ketelbey, A History of Modern Times, London, 1951.
7. Lipson, Europe in the 19th & 20th Centuries, London, 1949.
8. T.L. German, The Rise and Fall of Nazi Germany, 1956.
9. E.H. Carr, German-Soviet Relations between the two world wars, 1951.
10. A.J.P. Taylor, The origins of the Second World War, 1961.
11. F.A. Kev & others, The origins and Consequences of world war II, 1948.
12. Elizaweth Viskman, The Rome Burlin Axis, 1949.
13. Wiston Churchil, The Second World War, 6 Vol. (1948-1953).
14. Luis Snaider, The War, 1939-1945 : A Concise History, 1960.

**15.** बी.के. श्रीवास्तव, चीन एवं जापान का इतिहास, एस.बी.पी.डी., आगरा, 2005.
**16.** देवेन्द्र सिंह चौहान, समकालीन यूरोप, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1986.
**17.** दीनानाथ वर्मा, आधुनिक यूरोप का इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
**18.** पार्थ सारथी गुप्ता, यूरोप का इतिहास, हिंदी माध्यम क्रियान्वयन निदेशालय, दिल्ली
**19.** विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1987.